ॐ

* चमन इस्लाम की सैर *

लेखकः—

पं० शिव शर्मा महोपदेशक

प्रथम संस्करण) * (मूल्य २-००- रु०

समर्पण

आर्य हिन्दू संस्कृति की रक्षा में
प्राणाहुति देने वाले
अमर शहीदों की
स्मृति में
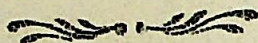
नोट—आर्य हिन्दू संस्कृति प्रेमियों से निवेदन है कि इस प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन में तन मन धन से सहायता प्रदान करने के निमित्त अपने अपने स्थानीय आर्य समाजों से संम्पर्क स्थापित करें, जिससे हम भविष्य में आपकी अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

भूमिका

सज्जनों ! यह पुस्तक "चमन इस्लाम की सैर" इसलिये लिखी है कि प्रायः जब मुसलमान मौलवियों से शास्त्रार्थ होता रहता है, तो वे कह देते हैं कि अमुक मसला या रिवायत हमारे मज़हब में नहीं है. पर इस पुस्तक के हाथ में रखने से वे कदापि नहीं कह सकते कि यह बात हमारे यहां नहीं लिखी है। विशेषकर क़ादयानी भाइयों ने तो इस बात का ठेका ले लिया है कि वे हर एक इस्लामी मामले की नई-नई तावीलें गढ़ें। क़ादयानी लोग चाहते हैं कि मुहम्मदी मत मे कोई भी बात विद्या और बुद्धि के विरुद्ध न रहे, परन्तु जिस मत की नींव ही अविद्या पर रक्खी हो वह बुद्धि के अनुसार कैसे बनाया जा सकता है ? क्या कभी कोयला भी धोने से सफेद हो सकता है ? यदि कोयले को सफेद करना चाहते हो तो उसको अग्नि में डाल दो, वह अग्नि उसके कालेपन को क्षण भर में दूर कर देगी। उस समय वह कोयला अत्यन्त श्वेत बन जायगा। इसी प्रकार इस्लाम के अन्दर इतने कलौंच हैं कि यह बिना वैदिक-अग्नि में डाले अपनी स्याही को दूर नहीं कर सकता। ऋषि दयानन्द ने वह भट्टी तैयार कर दी है, बहुतों ने इसकी शरण में आकर अपने हृदय की कालिमा को दूर कर दिया है, शेष कर रहे हैं। प्रायः मुसलमान भाई अपने मत की स्याही के विषय में अनभिज्ञ होकर अपने को परम श्वेत समझते हैं। इसलिए इस धार्मिक चर्चा के समय मैंने यह धर्म सम्बन्धो पुस्तक लिखी है जिससे प्रत्येक धर्म-

प्रेमी जान सके कि इनके मत के क्या-क्या सिद्धान्त हैं ? आप किसी पुस्तक अथवा समाचार-पत्र में कोई सिद्धान्त इस्लाम विषयक पढ़ लें और पता जानना चाहें कि यह बात कहां पर किस पुस्तक में लिखी है तो तत्काल इस पुस्तक में पूरा पता पा सकते हैं। व्याख्यानों में प्रायः बहुत-सी बातें कह-सुन दी जाती हैं, परन्तु बहुतों को उनका पता नहीं लगता कि यह किस पुस्तक में और किस पते पर लिखी है ? यह भी सारा पता इस पुस्तक से चल जायगा। इस पुस्तक में जो-जो प्रमाण संग्रह किये गये हैं वह सुन्नी मुसलमानों की प्रमाणिक पुस्तकों के हैं। कोई सुन्नी इन पुस्तकों के मानने में आनाकानी नहीं कर सकता हाँ ! अपने मज़हब को ही छोड़ दे तो दूसरी बात है। यह सारे प्रमाण पुस्तकों को सावधानी से देखकर लिखे हैं। किसी दूसरी पुस्तक में से उद्घृत किये हुए नहीं चुन लिये हैं। प्रत्येक भाई, निस्सन्देह रूप से समय पड़ने पर इस पुस्तक में लिखे प्रमाण स्वमत मण्डन और परमत खण्डन में दे सकता है। कोष्ट ब्रैकट के अन्दर की इबारत हमारी अपनी है। समीक्षा भी हमारी लिखी हुई है। इस पुस्तक में छः दस्ते हैं। पहले दस्ते में मिश्कात की सैर है, दूसरे दस्ते में मिनहाजुन्नवव्वत की सैर है, तीसरे दस्ते में तारीख़ .ख़ुलफ़ा की सैर है। चौथे दस्ते में शहर बक़ाया की सैर है, पाचवें दस्ते में मुरादाबाद के मुक़दमे की सैर है (जो मेरे ऊपर चला था) छः दस्ते में ग़यातुल औतार की सैर है। इन छहों दस्तों में प्रायः इस्लाम के सारे ही सिद्धान्त आ गये हैं किसी की निन्दा करने के लिये नहीं न किसी पर व्यर्थ आक्षेप किये गये हैं। यह पुस्तक केवल मुसलमानों के साथ शास्त्रार्थ करने वालों के लिये है जिससे हवालों का ज्ञान हो।

—लेखक
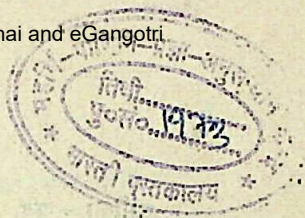
"चमन इस्लाम की सैर"

प्रथम दस्ता

मुसलमान की पहचान

१—जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान ईज़ा न पावें। मिश्कात किताबुल ईमान सफ़ा २ हदीस नम्बर ५

समीक्षा—हां ठीक है ! दूसरे मजहबवाले चाहे कितना ही सताये जावें, परन्तु मुसलमान मुसलमान के हाथ से न सताया जावे।

२—हज़रत फ़रमाते हैं—दोज़ख में मुझे औरतें रहने वाली दिखाई गई हैं। जिल्द १ सफ़ा १० ह० नं० १८

समीक्षा—इससे सिद्ध है कि दोज़ख में ···औरतें ज्यादातर जायेंगी। क्या कहना है।

३—अल्लाह कहता है—मुझे आदम की औलाद तकलीफ़ देती है। ज़माना मैं ही हूँ। जि० १ सफ़ा ११ ह० नं० २०

समीक्षा—लो मुसलमानों ! अब तो अल्लामियाँ भी तकलीफ़ में मुब्तला हो रहे हैं। बेमिस्ल अल्लामियां अपनी मिसाल ज़माने से दे रहे हैं। अब वैदिक अलङ्कारों पर आक्षेप न करना।

४—लाइलाहाइल्लिल्लाह करने वाला चोरी और ज़िना करे तो भी जन्नत में दाख़िल होगा। जि०१ सफ़ा १२, १३ ह०नं० २४

समीक्षा—अब तो मुसलमानों की पौबारह हैं! मजे से दुनियां में कुकर्म करें। यही वजह है कि आप में ऐसे ज्यादा पाये जाते हैं।

५—जिसने अल्लाह के होने में और मुहम्मद के रसूल होने पर मसीह के रूह अल्ला (अल्ला की आत्मा) होने पर गवाही दी उसके कैसे ही आमाल (कर्म) हों, अल्लाह उसे जन्नत (स्वर्ग) में भेजेगा।

जि० १ सफ़ा १३ ह० न० २५

६—जिहाद कौन-सा अफ़जल (श्रेष्ठ) है? फरमाया (हज़रत ने) जिसमें खूंरेज़ी हो, रुधिर बहाया जावे और छेंड़े कट जावें। जि० १ ह० न० ४२

समीक्षा—मुसलमान लोग, इस्लामी सल्तनत न रहने से कहते हैं कि जिहाद के अर्थ ज़बान से इस्लाम का प्रचार करने के हैं, परन्तु जहां खुदमुख्त्यार (स्वतंत्र) सल्तनतें हैं, वहां यह अर्थ नहीं माने जाते। काबुल में मौ० इनायतुल्ला खां वग़ैरह पत्थरों से मार ही डाले गये। सिर्फ़ इसलिए कि क़ादयानी (काफ़िर) थे। आम मुसलमान अहमदियों को काफ़िर कहते हैं।

७—जमीन और आसमान बनाने से पचास हज़ार वर्ष पहले अल्लाह ने इन्सान की तक़दीर बनाई। अल्लामियां का तख्त पानी पर था।

जि० १ सफ़ा ८ ह० नं ७३

समीक्षा—क्या अल्लामियां का इल्म क़दीम नहीं है? जब अच्छी बुरी तक़दीरें पहले ही अल्लामियां ने लिख दीं तो इंसान का क्या क़सूर? अगर जिना करना लिख दिया तो अल्लाह के हुक्म से जिना करता है। चोरी करना लिख दी तो चोरी

करता है मज़ा यह है कि अल्लामियां खुदही जिना और चोरी कराये फिर खुद ही सज़ा देकर दोजख में भी डाले ! ऐसे अन्धेर नगरी में मुसलमान ही रहना पसंद कर सकते हैं।

८—एक रोज़ हज़रत आदम और हज़रत मूसा साहब में आपस में झगड़ा हो पड़ा। हज़रत मूसा ने हज़रत आदम को ताना दिया। कि तुम वही तो हो जिसने खुदा का हुक्म न माना और बहिश्त में गेहूँ खा लिया फिर वहां से निकाल दिये गये। आदम मूसा पर ग़ालिब आये। ह० आदम ने कहा— मेरे ऐसा फेल करने से ४० वर्ष पहले तौरेत में ऐसा लिख दिया तो मेरा क्या कसूर ? जैसा अल्लामियां ने मुझसे कराया, वैसा ही मैंने कर दिया।

जिल्द १ बाबत् तक़दीर फ़सल १ सफ़ा २८, ह० नं० ७५

९—मरते वक्त जैसे कर्म होंगे वैसी गति होगी। ह० नं० ७७

१०—मां के पेट ही में बाजे दोज़खी और बाजे जन्नती होते हैं।

सफ़ा २९ ह० नं० ७८

११—इन्सान के लिये पैदा होने से पहले दोजख और जन्नत लिख दिया। अमल भी वैसे ही करेगा।

जि० १ सफ़ा ३० ह० नं० ७९

१२—आदम की औलाद पर जिना आयद कर दी यानी एक हिस्सा जिना जरूर करेगा, ऐसा पहले ही लिख दिया गया।

जि० १ सफा ३० ह० नं० ८०

समीक्षा—क्या इस ही लिये आप लोग पापों से नहीं डरते ? क्यों अपने साथ अल्लामियाँ को दोज़ख में घसीटते हो ?

१३—सब के दिल अल्लाह की दो उँगलियों में है।

ह० नं० ८३

१४—अल्लाह के हाथ में तराजू है। रिज़्क़ (खुराक) कम ज्यादा करता है। जि० १ सफा ३२ ह० नं० ८६

१५—मुशरिकों के कर्म अल्लाह जानता है।

ह० नं० ८७

१६—अल्लाह ने आदमी की पीठ पर हाथ फेरा।

हदीस न० ८६

१७—जन्नती जन्नत में जायेंगे चाहे उनके कर्म कितने ही बुरे होंगे। दोज़खी दोजख में जायेंगे. चाहे उनके कर्म कितने ही अच्छे होंगे।

जि० १ सफा ३४ ह० नं० ६०

समीक्षा—क्या इसका यही मतलब है कि अल्लाह ने जिसको दोज़खी लिख दिया अगर वह अल्लाह के लिखे के खिलाफ़ अच्छे कर्म करेगा तो भी दोज़ख में ही डाला जायगा। अगर जिसको जन्नती लिख दिया तो वह चाहे कितने ही बुरे कर्म करे तो भी जन्नत में ही जायेगा? तब तो बुरे कर्म करना व्यर्थ ही रहा? मुसलमानों! किस लिये भूखे मरते हो? क्योंकि ज़मीन पर सर रगड़ते हो? किस वास्ते वेकर्मों के खून की नदियां बहाते हो। शायद तुम्हारे मुक़द्दर में दोज़ख ही लिख दिया हो। ये काफ़िर बुतपरस्त शायद हूरोगिल्मा पा जायें, शायद इनकी तक़दीर में खुदा ने बहिश्त लिख दिया हो। कर्म फिलासफी के अरबी रसूल कैसे जानकार थे यह जान लेना चाहिये।

१८—क़लम सब कुछ लिखकर खुश्क हो चुका, यानी जो कुछ होना है, वह लिखा जा चुका, उसमें तग़ैय्युर तबद्दुल (लौट-फेर) न होगा।

जि० १ सफा ३५ ह० नं० ६४

समीक्षा—हदीस नं० ८६ में बतलाया है कि रिज्क कमती-बढ़ती करता है, परन्तु यहां कहता है कि कुछ लौट-फेर न होगा ।

१९—मुसलमान और उनके बच्चे जन्नत में जायेंगे । मुनाफ़िक़ों के बच्चे और वह दोज़ख में जायेंगे ।

जि० १ ह० नं० ११०

समीक्षा—मासूम—(निरपराध) बच्चे नरक में क्यों जायेंगे ? खुदा ने उनको काफ़िरों के घर क्यों पैदा किया ? वाह रे इंसाफ ।

२०—खुदीजा (हजरत की सबसे पहली स्त्री) के जहालत के ज़माने के दोज़ख में है ।

जि० १ ह० नं० ११०

२१—मुरदा लौटनेवालों की जूतियों की आवाज सुनता है ।

ह० नं० ११९

२२—कब्र में ही इंसाफ हो जाता है ।

जि० १ ह० नं०१२०

२३—मेरी उम्मत के ७३ फिरके होंगे, उनमें एक जन्नती और ७२ दोज़खी होंगे ।

जि० १ ह० नं० १६३

समीक्षा—हज़रत को भी अपने कुरानी मज़हब की गड़बड़ी मालूम होती थी, तभी तो जैसे बीज बोये थे, वैसे ही फलों का अन्दाजा भी लगा लिया था ।

२४—मेरा कलाम अल्लाह के कलाम को मंसूख नहीं करता, अल्लाह का कलाम मेरे कलाम को मंसूख कर देते हैं, अल्लाह का एक कलाम दूसरे मंसूख कर देता है, मेरी हदीस दूसरी को, हदीस कुरान की तरह मंसूख कर देती है ।

जि० १ ह० नं०१८६

२५—जो क़ुरान का मतलब अपनी राय से भी कहे तो गुनहगार है। ह० नं० २१६

समीक्षा—समझ में नहीं आता कि सही मतलब कहने पर भी इन्सान गुनहगार क्यों है। इस हिसाब से तो जनाब मिर्ज़ा गुलामअहमद साहब जरूर गुनहगार हैं।

२६—अरब में ७ जुबाने थीं, (क़ुरैश, तई हवाजन, अहल-यमीन, सकीफ़ हिज़ैल, बनीतमीम) क़ुरान सबसे सख्त जुबान क़ुरैश में उतरा था; बाद अज़ाँ इजाजत हो गई कि चाहे जिस लुगत में पढ़ा। मगर जब लगे बाहम (आपस में) लड़ने झगड़ने और एक दूसरे को काफिर कहने लगे तो हज़रत उसमान ने एक कुरान शरीफ़ लुगत कुरैश में लिखकर उसकी नक़लें जावजा तक़सीम करके बाक़ी लुग़त (कुरान मिटा डाले। अवक़ारियों ने (लँके साथ क़ुरान पढ़ने वाले) मुततबअ व तफतीश करके (अपने विचार से और ढूंढकर) सही-सही सनदों और रिवाअतों (कहावतों) से उन क़िरअतों को (पाठों को) तहकीक करके लिख दिया है। ह० न० २२२ की शरह

ऐसा जमाना आयेगा कि इस्लाम नाम ही रह जायगा, और कुरान की रस्म रह जायगी। ह० नं० २५८

२७—ऐसा जमाना आयेगा कि इस्लाम नाम ही रह जायेगा, और कुरान की रस्म रह जायगी।

समीक्षा—ऋषि दयानंद की कृपा से यह समय नज़दीक ही आ रहा है। शुद्धी का बाजार गर्म हो रहा है। टरकी से मुसलमानी टरक रही है। फ़ारिस से फरार हो रही है।

२८—हजरत ने सुबह की नमाज़ में सूरएरूम पढ़ी, तब क़िरअत (पाठ) भूल गये। फरमाया कि तुम्हारा बज़ू ठीक न होने से मैं भूल गया। जि० १ ह० न० २७५०

२९—जिबराईल ने वजू और नमाज हज़रत को सिखाई ।

ह० नं० ३३९

३०—पहले पंचास नमाजें फर्ज (खुदा की आज्ञा से) थीं ।

ह० नं० ४१२

समीक्षा—खुदा की भूल नम्बर १ थी कि ऐसी असम्भव आज्ञा दी । अगर ऐसा हो जाता तो रात-दिन मुसलमानों को उठा बैठी ही में गुज़र जाते ।

३१—हज़रत ने अपनी बीवी के नहाये हुए तसले के पानी से वजू किया, हालांकि स्त्री जुनबी (भोग कराये हुए) थी । बीवी ने कहा पानी नापाक है ; हज़रत ने फरमाया पानी ने तो भोग नहीं कराया ।

जि० १ ह० नं० ४१९

समीक्षा—यह है मुसलमानों के नबी की पवित्रता । क्या इसी भरोसे पर हिन्दुओं को नापाक कहते हैं ?

३२—ग़ुस्ल करने के बाद हज़रत गरम होने के लिए आयशा से लिपट जाते थे ।

जि० १ ह० नं० ४२०

३३—जहां तसवीर और कुत्ता हो वहां रहमत का फ़रिश्ता नहीं आता ।

ह० नं० ४२४

समीक्षा—मुसलमानों पर खुदा की रहमत इस ही लिए नहीं होती कि वह अपने पास तसबीरदार सिक्के रखते हैं । मुसलमान अगर रहमत चाहते हैं तो सरकारी सिक्के उनको अपने पास नहीं रखने चाहिए, कोरे नादान बन बैठे ।

३४—एक कुंए में हैज़ के चिथड़े और मरे हुए कुत्ते डाले

जाते थे लोगों ने उसके पानी की बावत पूछा, हजरत ने कहा पाक है ।
ह० नं० ४३८

समीक्षा—क्यों मुसलमानों ! क्या हैज के कपड़ों और मरे हुये कुत्तों का अर्क पानी भी सुन्नत है ? इसी को पाकीजगी कहते हैं ।

३५—मिट्टी मल लेने से बरतन पाक हो जाता है ।
ह० नं० ४४८

३६—हजरत की खुश्क मनी आयशा छील डालती थी ।
ह० नं: ४५४

३७—जिसका गोश्त खाया जाय उसका पेशाव पाक है ।
ह० नं० ४७१

३८—यहूदी हैज के वक्त औरतों के पास नहीं जाते थे, हजरत ने हुक्म दिया कि जिना (भोग) के सिवा सब कुछ करो ।
ह० नं० ४९८

३९—जब आयशा हैज से होती तो हजरत तहबन्दी बँधवा देते थे और लिपट जाया करते थे ।
जि० १ह० नं० ४९९

४०—हैज के वक्त आयशा बरतन से जहाँ मुह लगाकर पानी पीती थी वहीं मुह लगाकर हजरत भी पानी पीते थे । हड्डी को वहीं चूसते थे जहाँ पर मुंह लगाकर आयशा चूसती थी । यह रिवायत सही मुसलिम में भी है ।
जि० १ ह० नं० ५००

४१—हजरत हैज की हालत में आयशा की गोद में सर रखकर कुरान पढ़ लेते थे ।
जि० ह० नं० ५ १

४२—हैज में नाफ़ (नाभि) से ऊपर सब कुछ करले ।

हृ० नं० ५०८

४३—आयशा हजरत के आगे सोती रहती, हजरत नमाज पढ़ लिया करते, सिजदे के वक्त इशारा करते थे कि ऐ आयशा पैर सिकोड़ ले, वह सिकोड़ लेती हजरत सिजदा कर लेते ।

हृ० नं० ७२८

४४—गदहा, सुअर, कुत्ता, मजूसी, यहूदी औरत के आगे गुजरने से नमाज़ टूट जाती है ।

जि० १ हृ० नं० ६५५

४५—हजरत निमाज में भूल गये ।

हृ० नं० ६५१, ६५३

४६—हजरत ने सूरए न ाम में सिजदा किया और आपके साथ मुसलमानों और मुशरिकों ने, जिन्नों और सब लोगों ने सिजदा किया । बुखारी में भी नक़ल किया है ।

जि० १ हृ० नं० ६५५

हासिया—मुशरिकों ने सिजदा इसलिये किया कि आपने क़िरअत में अल्लाह बरतर की तारीफ़ पढ़ी थी । शैतान ने आपकी आवाज में अपनी आवाज मिलाकर तुकबन्दी करके बुतों की तारीफ करदी, इस वास्ते मुशरिक भी बुतों का नाम सुनकर सिजदे में गिर पड़े ।

जि० १ सफ़ा २३७

४७—रसूल ने फरयाया कि क़यामत के दिन खुदा कहेगा कि मैं बीमार प्यासा और भूखा था मेरी खबर भी नहीं ली ।

जि० १ सफा २३८ हृ० नं० १४१५

सही मुसलिम में भी इस हसीद को बयान किया है ।

४८—आयशा फरमाती हैं कि जैसी तकलीफ़ मरते वक्त मैंने आँ हज़रत को होते देखी उतनी ज्यादा किसी को होते नहीं देखी ।

जि १० ह० नं० १४६६

४९—आयशा फ़रमाती हैं कि हज़रत ने मेरे सीने और गर्दन के दरम्यान वफ़ात पाई—प्राण छोड़े । बुखारी की भी रिवायत है ।

ह० नं० १४४७

५०—ताऊन में मरना शहादत (वीर गति पाना) है ।

ह० नं० १४५२

५१—फ़रिश्ते इसी तरह कहते रहेंगे, जब तक वह उस आसमान तक न पहुँच जायगा, जिस पर अल्लाह है ।

ह० नं० १५३२

५२—मोमिनों (मुसलमानों) की रूहें सब्ज़ जानवरों के कालिबों में होगा, जो जन्नत के बागों के मेवे खाते होंगे । वहीं की और इब्नमाजा ने ऐसी रिवायत की है ।

जि० १ सफ़ा ३८५ ह० नं० १५३८, १५३९

५३—अच्छी कुरबानी सींगों वाला दुम्बा है ।

ह० नं० १५४८

५४—पक्की क़बर या उस पर मकान न बनाओ ।

ह० नं० १६००

५५—पक्की कबर या उस पर लिखना मना है ।

ह० नं० १६११

५६—जिस मुसलमान के तीन बच्चे मर जायें वह दोजख में नहीं जायेगा। हाँ, कसम पूरी करने को चला जायगा।

ह० नं० १६३१

हाशिया—वह दोजख में नहीं जायगा, हाँ खुद की कसम पूरी करने को चला जायगा। खुद ने जोश में आकर कह दिया है "तुम एक बार दोजख में जरूर जाओगे चाहे तकलीफ पहुंचे या नहीं।

५७--हजरत की माँ की मग़फ़ुरत नहीं हुई।

ह० नं० १६५६

हाशिया--हजरत की माँ काफ़िर थी। इसलिये नरक में है।

५८---आयशा हजरत अबूबकर की कबर पर वे कपड़े पहने चली जाती थी और कहती थी---"खाविंद और बाप हैं शर्म किससे करूँ।"

जि० २ ह० नं० १६७३

समीक्षा---विधवा होने के समय आयशा १८ बरस की थी। इस उमर में नंगा जाना क्या ठीक था ?

मिश्क़ात जिल्द २

५९---कुरान पढ़नेवालों की गवाही देने कयामत के दिन, कुरान सिफ़ारिशी बनकर आयगा।

जि० २ ह० नं० ३३९

६०—कयामत के दिन कुरान झगड़ेगा।

जि० २ ह० नं० ३५०

६१—खाल में लपेटकर कुरान आग में डाल दिया जाय तो खाल नहीं जलेगी। दारमी में भी लिखा है।

जि० २ ह० नं० ३५८

समीक्षा।—आपकी खाल ऐसी ही है तो आज़माना चाहिये ।

६२—जमीन और आसमान पैदा करने से १ हजार वरस पहले सूरएत्वाहा और यासीन पढ़ी गई ।

जि० २ ह० नं० ३६६

६३—सूरए रहमान कुरान की दुलहिन हैं ।

जि० ह० नं० ३६७

६४—कुरान हिफ्ज करो वर्ना ऊँट से ज्यादा भागनेवाला है ।

जि० २ ह० नं० ४०४

६५—खुदा ने कुरान सुनने को कान लगाया ।

जि० २ ह० नं० ४६०

६६—विस्मिल्लाह सबसे आखिर में नाजिल हुई सूरतों की हद क़ायल करने के लिये ।

जि० २ ह० नं० ४३५

६७—जंग यमामा के वाद जैद विन सावित ने उमर के कहने से कुरान ऊँट की हड्डियों और पत्तों पर से जमा किया ।

जि० २ ह० नं० ४३७

यह भी कहा कि जिस काम को तुम करते हो वह आं हजरत ने नहीं किया यह रिवायत सही बुख़ारी ने लिखी है ।

हाशिया—क्योंकि अगर कुरान लोगों की जुवान पर ही रहता तो जब सारे सहावी (जो हजरत की जिन्दगी में हजरत के जरिये मुसलमान वने) मर जाते तो कुरान दुनिया से उठ जाता ।

६८—अन्स विन मालिक रिवायत करते हैं कि यजीफा विन यमान ने हजरत उसमान से अर्ज किया कि यह हजीफा

जंग फतेह आरमेनिया में अहले शाम से, और जंग आज़रबेजान में ईराक़ वालों से लड़े थे। हज़ीफ़ा, लोगों में क़िरअत (पाठ) में इख़्तलाफ़ (भेद) देखकर घबड़ा गये और हज़रत उस्मान से अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! इस उम्मत को इससे पहले संभाल लीजिए कि वह यहूद और नसारा (यहूद और ईसाई) की तरह अपनी किताबों में इख़्तलाफ़ (पाठ-भेद) करने लगे। हज़रत उस्मान ने एक आदमी हज़रत हफ़सा (मुहम्मद साहब की बीवी) के पास भेजा और कहा कि हमारे पास कुरान शरीफ़ भेज दो ताकि (हम उसके मुआफिक़) तमाम कुरान को लिख लें, फिर तुम्हारा कुरान तुमको वापिस कर देंगे। हज़रत हफ़सा ने अपना कुरान शरीफ हज़रत उस्मान के पास भेज दिया। हज़रत उस्मान ने ज़ैद बिन साबित और अब्दुल्ला बिन जुबैर और सईद बिन मैसब और अबदुल्ला बिन हारिस बिन हशाम को हुक्म दिया कि कुरान सही करो उन्होंने सब कुरानों में तशरीह (ठीक ठीक शुद्धी) कर दी। हज़रत उस्मान ने तीनों कुरैशियों से कह दिया था कि जब तुम्हारा और ज़ैद बिन साबात की कुरान की किसी क़िरअत (पाठ) में इख़्तलाफ़ (पाठ भेद) हो, तो उसे कुरैश की ज़बान में लिखना, क्योंकि कुरान शरीफ़ कुरैश की ज़बान मे उतरा है, और सबही ने ऐसा ही किया। जब तमाम कुरान हज़रत हफ़सा के कुरान के मुआफ़िक लिख चुके, तो हज़रत उस्मान ने हज़रत हफ़सा का कुरान वापिस कर दिया, और हर तरफ उनका लिखा हुआ कुरान भेज दिया और उनके अलावा कुरानों को जला देने का हुक्म दिया। हदीस बुखारी में लिखा है।

जि० २ ह० नं० ४३८

६९—इब्नअब्बास फ़रमाते हैं—मैंने हज़रत उस्मान से पूछा इस बात की तुमको किसने जुर्रत दी कि सूरए अनफ़ाल जो वह सात सूरतें जो कुरान में सबसे श्रेष्ठ कहाती है, सब अमसानी में से हैं, और सूरए बरात जो सौ आयतें वाली सूरतों में से हैं, तुम ने दोनों को मिला दिया और उनके बीच में बिस्मिल्लाह की सतर नहीं लिखी, और तुमने सूरतों को सात तवील सूरतों में रख दिया तुम्हें इसकी जुर्रत क्योंकर आगई ? हज़रत उस्मान बोले—रसूलअल्लाह सल्ले अला अलैह वसल्लम के जमाने मे कितनी आयतें कितनी आयतों वाली सूरतें उतरी थीं। जब आप पर कोई आयत उतरती तो फ़रमाते—दूसरे उस सूरत में लिख दो जिसमें यह जिक्र किया गया है, और सूरए अनफ़ाल मदीने में सबसे पहले नाज़िल हुई थी और सूरए बारात सारे कुरान के पीछे उतरी थी, और इसका क़िस्सा सूरए अनफ़ाल के किस्से के मुआफिक़ उतरा था। रसूल का इन्तिकाल हो गया और आपने हमसे बयान नहीं किया कि सूरए बारात भी सूरए अनफ़ाल में शालिल है (या नहीं है) इस वास्ते मैंने इन दोनों को मिला दिया है और बिस्मिल्लाह की सतर छोड़ दी है और सात लम्बी-लम्बी सूरतों में रख दिया है यह हदीस इमाम अहमद. तिरमिजी और अबूदाऊद ने रिवायत की है।

जि० २ ह० नम्बर ४३९

७०—जो मेरे पास पा प्यादा चल के आवेगा, मैं उसके पास दौड़ता हुआ जाऊँगा। मुसलिम हदीस में है।

जि० २ ह० नम्बर ४७९

७१—अल्लाह फ़रमाते हैं—और जब मैं किसी को अपना दोस्त बना लेता हूँ तो उसका कान, जिससे वह सुनता है, मैं ही

होता हूँ, और जिस आँख से वह देखता है मैं ही होता हूँ, और उसका हाथ जिससे वह छूता है मैं ही होता हूँ. और उसका पांव जिससे वह चलता है मैं ही होता हूं· बुखारी ने नक़ल किया।

जि० २ ह० नम्बर ४८०

७२—अल्लाह फ़रिश्तों से पूछता है कि मेरे बन्दे क्या कर रहे हैं? फरिश्तों! तुम कहाँ से चले आ रहे हो?

जि० २ ह० नम्बर ४८१

७३—अल्लाह के ९९ नाम हैं।

जि० २ ह० नम्बर ५००

७४ इंसान ने ९९ क़तल किये। उसने एक शख्श से-दरयाफ़्त किया कि मेरी तोबा कुबूल होगी या नहीं? उसने कहा-नहीं। उसने उसको भी मार डाला। फिर वह दरयाफ़्त करने को दूसरी बस्ती को चला। रास्ते में इत्तिफ़ाक से मर गया, दोजख और जन्नत दोनों ही के फरिश्ते उसको लेने को आये। बहिश्त के फरिश्ते कहते थे हम इसको जन्नत में ले जायेंगे। दोजख के फरिश्तों इसको दोज़ख में ले जाना चाहते थे दोनों जगहों के फरिश्तों में आपस में खेंचातानी होने लगी। हज़रत जिबरील ने यह फेंसला किया कि ज़मीन को नापा जाय कि यह जहां से चला था वहां से मरने की जगह नजदीक थी या वह बस्ती जहाँ वह जाना चाहता था? नापते वक्त खुदा ने हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन! तू खिंच कर, मरने की जगह को बस्ती के नज़दीक कर दे। पस नापने पर वह बस्ती मरने की जगह से नज़दीक हो गई।

जि० २ ह० नम्बर ५४०

७५—अगर तुम बिलकुल गुनाह करना छोड़ दो तो अल्लाह

तुमको बिलकुल नेस्तनाबूद करके ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो गुनाह करें। सही मुसलिम में हैं।

जि० २ हु० नम्बर ५४१

७३—अल्लाह रात दिन के शुरू व आखिर में हाथ फैलाता है।

जि० २ हु० नम्बर ५४२

७७—इसान बार-बार गुनाह करता है, तौबा कर लेने पर खुदा बख्श देता है। जितनी मरतबा करे बराबर बख्शता रहेगा।

जि० २ हु० नम्बर ५४६

२८—बनी इसराईल में दो आदमी दोस्त थे—एक गुनाहगार और एक आबिद (भक्त)। दोनों की रूह खुदा ने क़ब्ज (जान निकलवाई) कराई। आबिद को दोजख में भेज दिया और गुनाहगार को जन्नत में भेज दिया।

जि० २ हु० नम्बर ५५९

७९—जो बहुत गुनाह करके तौबा करता है वह अल्लाह का दोस्त है।

जि० २ हु० नम्बर ५७१

हाशिया हजरत जिब्राईल मक्खी की तरत भिनभिनाते थे।

जि० २ हु० नम्बर ६९८

८०—मुशरिक—काफिर भी खुदा को लाशरीक मानते थे बुतों का मालिक खुदा को मानते थे। मुसलिम।

जि० २ हु० नम्बर ७५७

८१—संग असवद की दो आँखें होंगी, और जबान भी होगी क़यामत के दिन गवाही देगा।

जि० ३ हु० नम्बर ७८१

(मक्के के मन्दिर कावे में धरा हुआ काला पत्थर जिसे मुसलमान चूमते है।)

८२—कावे का तवाफ़ (परिक्रमा करना) और नमाज़ बराबर है।

जि० २ ह० ०' ७७६

८३—अरफे के दिन अल्लाह दुनिया में आस्मान की तरफ़ उतरता है। अल्लाह फ़ख्र करता है। फ़रिश्तों को गवाह ठहरता है।

जि० २ ह० नं० ८०१

८४—हज़रत ने कुरबानियों की ऊँटनियों के गले में जूतियों का हार डाल दिया। ज़माने जहालत की इस रस्म को हज़रत ने बरक़रार रक्खा।

मुसलिम। जि० २ ह० नं० ८२२

८५—हज के वक्त 'मिना' मुक़ाम पर हज़रत ने सिर मुँड़ाया और फ़रमाया कि इन बालों को बांट दो।

जि० २ ह० नम्बर ८५०

८६—अहराम में (हज की खास तैय्यारी में) औरत मुह पर नकाब न डाले।

जि० २ ह० नम्बर ८७७

८७—मक्के की ईंट ईंट को एक हबशी अलग करेगा।

जि० २ ह० नम्बर ६१६, ६२०

८८—मेरी क़ब्र की ज्यारत मेरी जिन्दगी में ज्यारत के मानिन्द है। जि० २ ह० नम्बर ६५२

समीक्षा—क़बर-परस्ती की शिक्षा हज़रत खुद ही दे गये हैं। मरने के बाद भी अपनी क़बर पुजवाना बता गये।

जिल्द ३

८९—विधवा की निस्बत क्वारी से शादी करना अच्छा है।

जि० ३ ह० नम्बर ६

९०—ज्यादा जनने वाली औरतों से निकाह करने चाहिये।

जि० ३ ह० नम्बर १२

९१—रसूल ने कहा क्वांरियों से शादी किया करो वह शीरी दहन (मीठी बोलने वाली) होती हैं थोड़े में राज़ी हो जाती है हैं।

जि० ३ ह० नं० १३

९२—वह निकाह सबसे अच्छा है जिसमें रोटी कपड़ा और महर कम हो।

जि० ३ ह० न० १८

९३—अबूहरेरा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने आकर नबी-सल्ले अला अलै वस्लम से अर्ज किया कि मेरा एक अंसारी औरत से निकाह करने का इरादा है। आपने फ़रमाया—तू उसे देख ले, क्योंकि अंसारियों की आंखों में कुछ नुक्स होता है, (यानी कंरजी आंखें होती हैं) यह हदीस मुसलिम ने रिवायत की है।

जि० ३ फ़सल १ ह० नं० १९

समीक्षा—मुसललमानों! अब मनू महाराज की बनाई भूरी आंखों की निन्दा पर आक्षेप न करना।

९४—औरत शैतान की शक्ल में आती हैं, ग़ैर ओरत को देखकर अपनी औरत से भोग करे। (मुसलिम) से जि० ३ ह० नं० २६

समीक्षा—अगर अपनी औरत न हो तो कहां कूदें?

९५—रसूल ने ग़ैर औरत को देखकर अपनी औरत सौदा से भोग किया। यारों से भी वैसा हीं करने को कहा।

जि० ३ ह० नं० २९

९६—हज़रत आयशा शादी के वक्त ७ साल की थीं, भोग के समय ९ साल की थीं, १८वें साल में वेवा हो गई ।

(मुसलिम हदीस में है) जि० ३ ह० नं० ५०

९७—जिसके यहाँ बच्चा पैदा हो नाम अच्छा धरे ।

जि० ३ ह० नं० ५८

९८—हज़रत ने मुताअ का ३ दफ़ा हुक्म दिया ।

(हदीस मुसलिम में है) जि० ३ ह० नं० ६८

९९—हम जिहाद करते थे हजरत ने मुताअ का हुक्म दिया ।

जि० ३ ह० नं० ७७

१००—इस्लाम के आरम्भ में मुताअ जायज था ।

जि० ३ ह० नं० ७८

१०१—उज्ल जायज है, हजरत ने मना नहीं किया ।

जि० ३ ह० नं० १०१

समीक्षा—उज्ल बड़ा घृणित कर्म है । लिखते शर्म आती है ।

१०२—हजरत मरते वक्त यही कहते थे (पूछते थे) कि कल मैं कहाँ रहूंगा ? यानी आयशा के घर रहने की बारी कब होगी ? यह हदीस सही बुखारी में है । जि० ३ ह० नं० १४८

१०३—हजरत ने सोदा (अपनी स्त्री) का तलाक देनी चाही, तब उन्होंने अपनी बारी हज़रत आयशा को दे दी ।

जि० ह० नं० १५४

१०४—औरत आदम की पसली से पैदा हुई थी ।

जि० ३ ह० नं० १५५

१०५—हजरत अपनी बीबी आयशा के साथ शर्त लगाकर दौड़े । आयशा आगे निकल गई ।

जि० ३ ह० नं० १६८

१०६—आयशा की गुड़ियां तक में घरी रहती थीं, उनमें परदार घोड़ा भी था। जि० ३ ह० न० १८१

१०७—तलाक से बुरी चीज दुनिया में कोई नहीं।
जि० ३ ह० नं २०८

१०८—तीन जुर्मों में मुसलमान कत्ल के काबिल होता है—
१—किसी को मार डालने वाला।
२—ब्याहा हुआ जिना करे।
३—मुरतिद हो (मुसलमान होकर काफिर हो जाये)
जि० ३ फसल १ ह० नं २५४

१०९—कुछ आदमी हजरत के पास आकर मुसलमान हो गये, आपने फरमाया ऊँट का पेशाब पियो। वह फिर काफिर हो गये। हजरत ने उनके हाथ पाँव कटवा लिये, आँखों में गर्म सलाई फिरवा दी, पानी तक पीने को नहीं दिया।
जि० ३ ह० नं० ४३९

११०—कुरान में पहले संगसारी की आयत थी। बुखारी और मुसलिम में लिखा है।
जि० ३ ह० न० ४५६

समीक्षा—(संगसारी-पत्थरों से मार डालना)। परन्तु अब वह आयत निकाल डाली गई है।

१११—रसूल ने फरमाया कि मुझे डर है कि कहीं मेरी उम्मत (मुसलमान लोग) लवालत (इगलाम) में न फँस जावें। तिरमिजी और इब्न माजा में है।
जि० ३ न० ४७६

११२—जो चौपायों से काला मुंह करे, उसको कोई सजा न दी जावे। जि० ३ ह० न० ४८४

११३—रसूल को औरतों के बाद घोड़े प्यारे थे ।

जि० ३ ह० न० ७६६

११४—हसन जब पैदा हुए तो हजरत ने क़ान में अज़ान कही ।

जि० ३ ह० न० १०३३

११५—एक औरत मदीने में खतना किया करती थी, हजरत ने कहा खाल थोड़ी काटा कर, इससे औरत और मर्द को ज्यादा——……आता है ।

जि० ३ ह० न० १३२०

मिश्कात जिल्द ४

११६—बुखार दोजख की भाप है ।

जि० ४ हदीस न० १२

११७—अगर हकीम कहे कि शराब ही इस मर्ज की दवा है, तो जायज है । जि० ४ हाशिया ह० न० २५

११८—हजरत अच्छे नाम को पसंद करते थे ।

जि० ४ ह० नं ६६

११६—जब आप किसी आमिल (कर्म-काण्डी) को भेजते तो उसका नाम पूछते । अगर उसका नाम आपको अच्छा मालूम होता तो आप खुश हो जाते थे और खुशी उसकी आपके चेहरे पर मालूम हो जाती थी । और अगर नाम उसका आपको बुरा मालूम होता, तो बुराई उसकी आपके चेहरे पर मालूम हो जाती । किसी बस्ती का नाम भी अगर अच्छा होता, तो आप खुश होते, वरना नाराज होते । जि० ४ ह० न ७१

हाशिया— इससे मालूम होता है कि अपने बेटे और खादिम (नौकर) के लिए अच्छा नाम रखना सुन्नत है । बुरे नाम कभी

तकदीर के मुआफ़िक़ हो जाते हैं । जैसे कि किसी ने अपने बेटे का नाम नुक़सान वग़ैरह रख लिया, ऐसा होने पर इत्तिफ़ाक़ से उसको नुक़सान हो गया, तो सब लोग यही जानेंगे कि इसी की वजह से नुक़सान हुआ है और उसको मनहूस समझकर उससे किनाराकशी करेंगे । लिहाजा उससे बचना चाहिये ।

रसूल की राय को सुन्नत कहते हैं । उनका अमल भी सुन्नत कहलाता है ।

जि० ४ ह० नं० १७

१२०—खुदा का कोई हुक्म होता है, तो फरिश्ते पर मारते हैं । गोया पत्थर पर जंजीर की आवाज होती है । बुखारी ने भी ऐसा ही लिखा है ।

जि० ४ ह० नं० ८४

१२१—तारा छूटना जिन्नात को मारना है । हदीस मुसलिम में ऐसा लिखा है ।

जि० ४ ह० नं० ८५

१२२—सितारों को तीन बातों के लिए पैदा किया है—

१—आसमान की जीनत के लिये ।

२—शैतान को मारने के लिये ।

३—निशानी के वास्ते जिससे इन्सान रास्ता मालूम करते हैं । इसके सिवा जो बयान करेगा, बस ख़ता करेगा ।

इसको बुखारी ने कहा है ।

जि० ४ ह० नं० ८६

१२३—अल्लाह के दोनों हाथ बन्द थे । आदम ने अपने बेटे दाऊद को अपनी उम्र में से ६० साल दिये थे ।

जि० ४ ह० नं० १४३

१२४—अपने बच्चे का—यसार, रबाह, बखीह फ़लह और नाफ़ा नाम न रक्खो। मुसलिम में है।

जि० ४ ह० नं० २३३

"शाहजहां" नाम न रखना चाहिये।

हाशिया ह० नं० २३४

१२५—हज़रत ने 'वर्र:' नाम से 'जैनब' नाम बदल दिया 'वर्र:' नेकवख़्त को कहते हैं। मुसलिम ने कहा है।

जि० ४ ह० नं० २३६

१२७—'वर्र:' से 'जवेरियो' नाम रख दिया। मुसलिम में है।

जि० ४ ह० नं० २३७

१२६—'आसिया' का नाम 'जमीला' रख दिया। मुसलिम में है।

जि० ४ ह० नं० २३८

१२८—एक लड़के का नाम वदलकर 'मञ्चर' रख दिया। इस हदीस को सबने माना है।

जि० ४ ह० नं० २३८

१२९—हज़रतने बजाय 'अब्बुल हुक्म' के अब्बुल शरीह' नाम रख दिया।

जि० ४ ह० नं० २४५

१३०—हज़रत बुरे नाम को बदल देते थे। तिरमिजी।

जि० ४ ह० नं० २५३

१३१—हज़रत ने 'अह्रम' से 'ज़रआ' नाम बदला। 'आस' 'अजीस' 'अतला' 'शैतान' 'हकम' 'उजाब' और 'सवाव' नाम वदल दिये। इब्न दाउद में है।

जि० ४ ह० नं० २५४

हशिया— अह्‌रम के मानी कांटे हैं। 'ज़रआ' खेती को कहते हैं।

१३२—मुनाफ़िक़ (ऊपर से मुसलमान भीतर से काफ़िर) सरदार भी हो, तो उसको सरदार मत कहो।

जि० ४ ह० नं० २५७

समीक्षा—देखिये ! मुसलमान को ग़ैर मुसलिमों से कितनी नफ़रत है ? अगर ये लोग महात्मा गांधीजी की निंदा करें और उनको महात्मा न कहें, तो क्या आश्चर्य है ?

१३३—हज़रत ने एक शख्स का नाम 'हज़्न' से 'सह्‌ल' धरा। सही बुखारी में लिखा है।

जि० ४ ह० नं० २५८

हशिया—'हज़्न' ने मानी सख्त जमीन व ग़म के हैं। 'सह्‌ल' माने नर्म के हैं।

१३४—हज़रत ने फ़रमाया कि नाम अम्बिया (नवियों) के नाम पर रक्खा करो। सबसे अच्छे नाम अब्दुला और अब्दुर्रहमान हैं। सब में सच्चे नाम 'हारस' और 'हम्माम' हैं। सबसे बुरे नाम 'हरब' और 'मर्रः' हैं जिनके मानी लड़ाई और तलखी हैं। अबूदाऊद से नक़ल है।

जि० ४ ह० नं० २५९

हाशिया—'हारस' के मानी कमाने वाला और 'हम्माम' के मानी कस्द करने वाले के हैं।

१३५—काफ़िरों की हिजो (निन्दा) शेर बनाकर करो। हज़रत ऐसा शायरों (कवियों) से फ़रमाते थे। मुसलिम हदीस में भी ऐसा लिखा है।

जि० ४ ह० नं० २६७

१३६—पीर (सोमवार) और जुमेरात (वृहस्पति)के दिन बच्चों के आमाल (कर्म) अल्लाह के सामने पेश किये जाते हैं। हदीस मुसलिम में है।

जि० ४ ह० नं० ४९५

(नवाबों की तरह अल्लाह के सामने मिसले पेश होती हैं। खूब)

१३७—हज़रत आपस में सुलह कराने और जंग में झूठ बोलते थे।

जि० ४ ह० नं ४९६

हाशिया—ह० नम्बर ४९६—जंग में मुसलमानों को कुव्वत देने के लिए और दुश्मन को फ़रेब में लाने के लिये झूठ बोलना जायज हैं।

१३८—रसूल फ़रमाते थे कि ३ तीन जगह झूँठ बोले—

१—अपनी बीवी को राजी करने के लिये।

२—जिहाद में।

३—सुलह कराने में। हदीस तिरमिज़ी में ऐसा लिखा है। जि० ४ ह० नं० ४९७

१३९—खुदा ने अक्ल को पैदा करके कहा—उठ, बैठ, पीछे हट, आगे बढ़ वगैरह। तुमसे बेहतर कोई नहीं।

जि० ४ ह० नं० ५२८

समीक्षा—फ़िर न जाने मुसलमान लोग बुद्धि से काम क्यों नहीं लेते ?

हाशिया—अक़्ल को खुदा ने मुजस्सिम (शरीरधारी) पैदा किया है जैसे कि मौत को। मौत क़यामत के बाद हलाल कर दी जायगी मेढ़े की शक्ल में। (खूब अक्ल से काम लिया ? क्या कहने हैं !)

१४०—अल्लाह कहता है—बड़ाई मेरी चादर है, बुजुरगी मेरा तहबन्द है, छीनने वालों को दोज़ख में भेजूंगा। सही मुसलिम में हैं।

जि० ४ ह० नम्बर ५३९

१४१—काफ़िरों को उन आमाल के बदले जो वह दुनियां में करते हैं रिज्क (अन्न-जल) दिया जाता है, जब वह आखिरत में (क़यामत के दिन इन्साफ के लिये) पहुंचेंगे, तो उनकी कोई नेकी न होगी, जिसकी उन्हें जज़ा (अच्छा फल) दिया जावे। सही मुसलिम में ऐसा लिखा है।

जि० ४ ह० नम्बर ६१८

१४२—हजरत आयशा फ़रमारती हैं कि हज़रत को तीन चीजें प्यारी थीं। औरतें खुश्बू और खाना।

जि० ४ ह० नम्बर ७२५

१४३—हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की उमर ६० से ७० साल तक होगी। इससे ज्यादा के बहुत कम होंगे।

जि० ४ ह० नम्बर ७४४

१४४—मैंने सारे बन्दे बातिल (असत्य) से फिरे हुए पैदा किये थे, शैतान ने आकर उनको उनके दीन से फेर दिया। हदीश मुसलिम में ऐसा लिखा है।

जि० ४ ह० नम्बर ८२४

१४५—सूरज छिपते वक्त अर्श के नीचे खुदा को सिजदा करता है, सूरज की करारगाह (ठहरने का स्थान) अर्श के नीचे है। मुसलिम में ऐसा लिखा है।

जि० ४ ह० नम्बर ९१९

१४६—मसीह मौयूद (ह० मरियम के बेटे) जमीन पर उतरेंगे, निकाह करेंगे, औलाद उनके होगी, ४५ वर्ष तक दुनियां

में रहेंगे, फिर मर जायँगे। ईसा मरियम के बेटे, अबूबकर और उमर के बीच में मक़बरे से उठेंगे।

जि० ४ हु० नम्बर ९९५

१४७—क़यामत सौ बरस के अन्दर आ जायगी।

जि० ४ हु० नम्बर ९९१, ९९२, ९९३

१४८—मैं क़यामत के इब्तदा (आरम्भ) में गया हूं। ५०० बरस के बाद क़यामत आयेगी।

जि० ४ हु० नम्बर ९९४, ९९५

१४९—क़यामत अल्लाह-अल्लाह करने वालों पर नहीं होगी। बुरे लोगों पर होगी।

जि० ४ हु० नम्बर ९९७, ९९८

समीक्षा यह कौन-सी फिलासफी है।

१५०—क़यामतके दिन खुदा जमीन को मुट्ठी में ले लेगा। और आस्मानों को दायें हाथ में लपेट लेगा।

जि० ४ हु० नम्बर ९७३, ९७४

१५१—क़यामत के दिन आसमान, जमीन पानी दरख्त, पहाड़ों और तहतुस्सराय (जमीन के नीचे के लोक) वग़ैरह को एक उँगली पर रखकर घुमायेगा। कुरान में भी ऐसा लिखा है।

जि० ४ हु० नम्बर ९७५

१५२—क़यामत के दिन तुम नंगे पांव, नंगे बदन, वे खतना किये हुए उठोगे। जैसे अव्वल दफा पैदा किया है वैसे ही दुबारा पैदा करेंगे।

जि० ४ हु० नम्बर ९८६

समीक्षा—यह पुनर्जन्म नहीं है तो क्या है।

१५३—हजरत आयशा फ़रमाती हैं कि—रसूल ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन सब मर्द और औरते नंगे पांव, नंगे बदन, बेखतना जमा होंगे। एक दूसरे को देखेंगे ? मैंने पूछा—बेपर्दा होंगे ? रसूल ने कहा—बहुत सख्त हाल होगा। यह हदीस सब ने मानी है।

जि० ४ ह० नम्बर ६८७

१५४—क़यामत के दिन इतना पसीना आयेगा कि ज़मीन पर ७० गज़ (पानी) चढ़ जायगा।

जि० ४ ह० नम्बर ६६०

१५५—क़यामत के दिन आज़ा (अङ्ग) गवाही देंगे। मुसलिम में भी ऐसा लिखा है।

थि० ४ ह० नम्बर १००५

समीक्षा—स्त्री पुरुषों के सारे ही अंग गवाही देंगे, व्यभिचारिणी स्त्रियों के भी तो अंग गवाही देंगे ? उसी तरह लखनऊ के चौक बाजार के लड़कों के भी सारे अंग गवाही देंगे। अच्छे ग्रामोफोन बजेंगे ? रिकार्ड भी तरह-तरह के सुरों के चढ़े होंगे ! अजीब लुत्फ होगा !! वाह-वाह !!!

१५६—क़यामत के दिन गिरोह बनाकर हर उम्मत के लोग अपने-अपने नबी के पास जायेंगे और कहेंगे कि हमको खुदा से कहकर बख्शवाइये। सारे ही नबी अपने को गुनाहगार कहकर हज़रत मुहम्मद साहब के पास भेज देंगे और कहेंगे कि मुहम्मद के अगले पिछले सब ही गुनाह खुदा ने माफ कर दिये हैं। वह तुमको बख्शवा देंगे। यह हदीस सबने मानी है।

जि० ४ ह० नम्बर १०२०

१५७—रसूल कहते हैं कि मैं इसलिये हंसा कि उस वक्त .खुदा को हंसी आ गई थी। मुसलिम में है।

जि० ४ ह० नम्बर १०२६

१५८—दोज़ख और जन्नत के बीच में मौत हलाल (क़त्ल) कर दी जायेगी। यह देखकर जन्नती .खुश होमें।

जि० ४ ह० नम्बर १०३७

१५६—मुक़ाम महमूद—जिस दिन .खुदा अपनी कुर्सी पर न.जूल फ़रमायेगा (उतरेगा) वह (कुर्सी) इस तरह बोलेगी जिस तरह नई काठी तङ्ग होने की वजह से बोलती है। दारमी में ऐसा लिखा है।

जि० ४ ह० नम्बर १०४२

१६०—जन्नती (जन्नत में जाने वाले मुसलमान) पाख़ाना पेशाव न फिरेंगी। डकार और पसीने से काम चल जायेगा।

जि० ४ ह० नम्बर १०६४, १०५६

समीक्षा—अच्छा जन्नत होगा जिसमें पाख़ाना मुँह की राह डकार बनकर निकलेगा, और पेशाव पसीना बनकर जिस्म के हर हिस्से से निकलेगा? यह जन्नत मुसलिमों को ही मुबारक रहे।

१६१—जैंहां, सैंहाँ, नील, फ़रात, ये सब जन्नत की नहरों में से आते-जाते हैं। मुसलिम हदीस में है।

जि० ४ ह० नम्बर १०७१

१६२—जन्नत की हूरें ७० जोड़े (पोशाक के) पहने होंगी, फिर भी पिंडली चमकेंगी।

जि० ४ ह० नम्बर १०७८

१६३—जन्नत में ८० हज़ार ख़िदमतगार और ७२ बीवियां होंगी। औलाद चाहेगा, तो फौरन् हमल होगा और उसी दम पैदा होकर बड़ी हो जायेगी।

जि० ४ ह० नम्बर १०६१

१६४—रसूल ने हज़रत जिब्रील को दो दफ़ा असली सूरत में देखा। जिब्रील के छः सौ पर थे।

जि० ४ हृ० नं० ११०३

१६५—जन्नती देखेंगे कि उनका परवरदिगार उनको ऊपर से देख रहा या झाँक रहा है। फिर वह परदे में हो जायगा।

जि० ४ हृ० नं० ११०५

१६६—हज़रत ने जिब्रील के छः सौ पर देखे। सबने इसको माना हैं।

जि० ४ हृ० नं० ११०४

१६७—दोज़ख़ हाज़िर की जायगी। सत्तर हज़ार लगामे लगी होंगी। हर लगाम को ७० हज़ार फ़रिश्ते थामे होंगे। सही मुसलिम ने कहा है।

जि० ४ हृ० नं० ११०७

१६८—चाँद और सूरज दो पनीर के टुकड़े हैं। क़यामत के दिन दोनों दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे। हसन ने पूछा कि किस गुनाह में? अबूहुरैरा ने कहा कि हज़रत ने कहा है।

जि० ४ हृ० नं० १११३

१६९—अल्लाह अपना पाँव दोज़ख़ में रक्खेगा। बहिश्त के वास्ते एक नई मख़लूक पैदा करेगा। इस हदीस को सबने माना हैं।

जि० ४ हृ० नं० ११३५

१७०—दोज़ख़ में हमेशा कुछ-न-कुछ पड़ता रहेगा और वह कहती रहेगा "हल्मिन मज़ीदिन्" कुछ और है? अल्लाह अपना क़दम रख देगा बहिश्त में, खाली मकान पड़े रहेंगे, अल्लाह उनके लिये नई मख़लूक पैदा करेगा। इस हदीस को सब मानते हैं।

जि० ४ हृ० नं० ११३६

१७१—खुदा का अर्श पानी पर था। सही बुखारी।

जि० ४ हृ० नं० ११३९

१७२—पैदायश से पेश्तर एक किताब (खूब, जो कुछ होना है वह पहले लिख लिया था) में लिख लिया था।

जि० ४ ह० नं० ११४१

१७३—हज़रत इब्राहीम ने ८० बरस की उम्र में अपना ख़तना अपने हाथ से बसूले से किया। यह हदीस सबने मानी है।

जि० ४ ह० नं० ११४४

१७४—इब्राहीम ने तीन झूंठ बोले—(१) औरत को बहन कहा: (२) मैं बीमार हूँ कहा, (३) मैंने बुत नहीं तोड़े कहा।

जि० ४ ह० नं० ११४५

१७५—खज़र ने जिस लड़के को मारा था, अगर वह ज़िन्दा रहता तो कुफ़ अख़्त्यार करता, अपने बाप को भी क फ़िर बनाता।

जि० ४ ह० नं० ११५१

१७६—हज़रत मूसा ने मौत के फ़रिश्ते के तमाचा मारा, वह काना हो गया।

जि० ४ ह० नं० ११५३

१७७—इस्लाम में सिर्फ ३ औरतें कामिल हुईं—मरियम फिर उनकी औरत आसिया और आयशा। इस हदीस को सब ने माना है।

जि० ४ ह० नं० ११६५

१७८—मख़लूक पैदा करने से पेशतर खुदा "अमा" यानीं अन्धेरे बादलों के पीछे था।

जि० ४ ह० न० ११६६

१७९—जिब्रील कहते हैं कि मेरे और खुदा के दरम्यान ७० परदे नूर के हैं। अगर उनमें से किसी के क़रीब जाऊँ, तो जल जाऊँ। जि० ४ ह० नम्बर ११७०

१८०—रसूल फ़रमाते हैं कि मैं हर एक ज़माने में आदम की औलाद के बहत्तरवें सिलसिले में पैदा होता चला आया हूँ। यह हदीस बुख़ारी ने नक़ल की है।

जि० ४ ह० नम्बर ११७९

हाशिया—यानी हर किरन—दौर में अपने बापों की पुश्त में होता था, वह सब ७२ ही होते थे, और जब तक मैं पैदा हुआ इससे ७२ बापों की पुश्तों में रहा हूँ। सफ़ा ३३८

१८१—बाजे नबी ऐसे हैं कि उनकी उम्मत में से सिर्फ़ एक ही ने उनकी तसदीक़ की है। मुसलिम ने कहा है।

जि० ४ ह० नम्बर ११८४

१८२—हर नबी को और मौजिज़े मुझे सिर्फ़ कुरान ही मिला है।

जि० ४ ह० नम्बर ११८६

१८३—हज़रत ईसा मुहम्मद साहब के हुजरे में दफ़न होंगे। हजरत के हुजरे में एक क़ब्र की जगह खाली है।

जि० ४ ह० नम्बर १२१०

"अन्नह फ़तहनालक" के मानी लिखते हुए लिखा है कि—ऐ मुहम्मद! तेरे अगले-पिछले गुनाह माफ़ कर दिये। (इससे सिद्ध है कि हज़रत भी पापी थे)।

१८४—हजरत इब्न अब्बास फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह यह फ़रमाते थे कि मुझ पर कुरबानी फ़र्ज की गई है और तुम पर फर्ज नहीं की गई है। दारमी में भी है।

जि० ४ ह० नं० १२१३

१८५—हज़रत लड़कों के गालों पर हाथ फेरते थे ।

जि० ४ ह० नं० १२२७

१८६—हज़रत का बेटा इब्राहीम दूध पीता मर गया । हज़रत ने फरमाया कि उसके लिये जन्नत में दूध पिलाने वाली होंगा । हदीस मुसलिम ने ऐसा लिखा है ।

जि० ४ ह० नं० १२६६

१८७—हज़रत गधे पर सवार होते थे । अपना जूता खुद गाँठते थे ।

जि० ४ ह० नं० १२५६, ६०

१८८—सबसे पहले "या अय्यो हलू मुहस्सरो" आयत उतरी । इस हदीस को सब ने माना है ।

जि० ४ ह० नं० १२८७

१८९—हज़रत को पत्थर सलाम करता था । मुसलिम में हैं ।

जि० ४ ह० नं० १२८६

१९०—हज़रत की जुदाई में मसजिद का सुतून बच्चे की तरह रोता था । बुखारी ने लिखा है ।

जि० ४ ह० नं० १३३७

१९१—हज़रत फ़रमाते कि मैंने ह० मूसा को छठे आसमान पर देखा; वह मुझको देखकर रोने लगे । (इसलिये रोये कि यह मेरे बाद को हुआ । इसकी उम्मत के लोग जन्नत में ज्यादा जायेंगे ; मेरी उम्मत के थोड़े जायेंगे । (वह एक प्रकार की जलन है) ।

१९२—हज़रत की मौत, ह० आयशा की बारी में, हजरत आयशा के घर, ह० आयशा के सीने पर हुई । बुखारी ने लिखा है । ह० आयशा ने अपनी दातौन चबाकर ह० मुहम्मद के मुंह मे मरते वक्त डाली ।

जि० ४ ह० नं० १३६३

१९३—मौत के वक्त बकरी के गोश्त के ज़हर से हज़रत को तकलीफ़ होती थी। (जंग खैबर के वक्त एक औरत ने आपको गोस्त में ज़हर मिलाकर खिला दिया था)।

जि० ४ ह० नं० १३९९

१९४—हजरत ने वफ़ात के वक्त कागज़; कलम और दावात मँगाई, ह० उमर ने कहा—इस वक्त हजरत को मौत की तकलीफ़ है। (हज़रत वसीअत करना चाहते थे, जिसको उमर ने नहीं होने दिया। इस पर शिया लोग उमर से नाराज हैं। शियों का ख्याल है कि उस वक्त मुहम्मद साहब ह० अली को खलीफा बनाते, लेकिन उमर उनका खलीफ़ा होना नहीं चाहते थे)।

जि० ४ ह० नं० १४००

हाशिया—ह० नं० १५९३—इब्राहीम हज़रत का लड़का था, जो मारिया कबतिया लौंडी से पैदा हुआ था।

१९५—जैद को, जैद बिन मुहम्मद—मुहम्मद का बेटा, कहते थे। इस ही की स्त्री जैनब से हज़रत ने निकाह किया था)।

जि० ४ ह० नं० १५७७

१९६—जन्नत में ह० मरियम—हज़रत मसी की माता, हज़रत मुहम्मद की स्त्री होगी।

हाशिया ह० नं० १६१०

१९७—जिबराईल ने तीन दफा ह० आयशा को ख्वाब में, रेशमी कपड़े में लपेट कर दिखाया, ह० मुहम्मद साहब को।

जि० ४ ह० नं० १६१४

(कुछ लोग कहते हैं कि ह० आयशा की तसवीर दिखाई गई)

१९८—हज़रत आयशा के बिस्तर पर ही वहीं (खुदा का हुक्म) आता था। इस हदीस को सब ने माना है।

जि० ४ ह० नं० १६१५

१९९—फिर उनकी औरत 'आसिया' से हजरत का निकाह जन्नत होगा।

जि० ४ ह० नं० १६१६

हाशिया—ह० नं० १६१७ हज़रत को आयशा की सूरत का नक़शा दिखलाया गया,

समीक्षा—मुसलमानों के मत में जानदार की तसवीर बनाना हराम है। जिबराईल ने आयशा की तसवीर क्यों बनाई। क्या ह० जिब्राईल मुसलमानी शरह के पाबन्द नहीं थे ?

२००—हज़रत के ज़माने में चार आदमियों के कुरान जमा किया था। इस हदीस को सबने माना है।

जि० ४ ह० नं० १६३०

२०१—'साद बिन मआज़ के' मरने से रहमान—अल्लाह का अर्श हिल गया।

जि० ४ ह० न० १६३२

२०२—जाबिर के बाप से अल्लाह ने बिना परदे के मुँह दर मुंह गुफ़तगू की।

जि० ४ ह० न० १६७२

तिरमिजी से नक़ल किया गया है।

२०३—अर्श खुशी के मारे हिल गया।

जि० १ ह० नं० १२९

२०४—मुरदा क़ब्र में आँखें मलता है। नमाज़ पढ़ना चाहता है।

जि० १ ह० नं० १३१

२०५—हज़रत के अगले-पिछले गुनाह खुदा ने माफ़ कर दिए।

जि० १ ह० नं० १३८

२०६—मेरा दीनी हुक्म मानो, दुनियाबी में तुमको इख्तियार है।

जि० १ ह० नं० १४०

(अरब के लोग खजूर के दरख्तों की आपस में शादी किया करते थे। हजरत ने ऐसा करने से मना किया। इत्तिफ़ाक़ से उस साल खजूरों की फसल मारी गई। लोगों ने आकर हज़रत से शिकायत की कि दरख्तों की शादी न करने से फ़सल पैदा नहीं हुई। इस पर हज़रत ने ऐसा हुक्म दिया)।

२०७—ईमान मदीने में साँप की तरह सिमट जायगा। (जैसे साँप सिमटता है। अपने सूराख़ में।

जि० १ ह० नं० १५३

———

* ओ३म् *

चमन इस्लाम की सैर

दूसरा दस्ता

मि हाजुन्नबव्वत तर्जुमा मदारिजुन्नबव्वत

जिल्द १

हज़रत का थूक

१—आवेदहन उस सरवर का (ह० मुहम्मद का) शिफ़ा-बख्श (नीरोग करने वाला) था बीमारियों का और दिलफ़िगारों का। ह० अंश के घर में एक कुँआ था, उसमें हज़रत ने थूका। उसका पानी मदीने के कुओं से मीठा हो गया।

जि० १ सफ़ा १६

हज़रत का पसीना

२—बाज हदीसों में आया है कि गुलाब पैदा हुआ है हजरत के पसीने से। हज़रत ने फ़रमाया कि चमेली मेरे पसीने से पैदा हुई है मैराज की शब को, और गुलाब जिबराईल के पसीने से, और चम्पा बुराक़ घोड़े के पसीने से। मैराज की रात को बदन से पसीने की बूंद टपकी, उससे गुलाब पैदा हुआ।

जि० १

हज़रत का पाखाना-पेशाब

३—जब हजरत पाखाना-पेशाब करते थे, ज़मीन फट जाती और पाखाना-पेशाब निगल जाती थी। हज़रत के पाखाने के

सने ढेले मुसलमान उठाकर सूंघते थे, तो उनको खुशबूदार पाते थे। अम्म ऐमन—एक लौंडी ने हज़रत का पेशाब पिया, तो हज़रत ने फ़रमाया कि पेट दर्द न करेगा। अम्म यूसुफ़ ने भी पेशाब पिया था, उससे कहा तू बीमार न होगी। एक मर्द ने पेशाब पिया, तो उसके बदन से और उसकी पुश्तों तक के बदन से खुशबू आती रही। हज़रत के पेशाब और खून को लोग तबर्रुक (प्रसाद) समझते थे। हज़रत ने हजामत बनवाई, खून निकला तो हज्जाम पी गया। हज़रत ने खून पीने वाले को कहा कि यह बहिश्ती है। हज़रत की गिलाजत पाक है।

जि० १ सफा ४७, ४८

हज़रत की मुबाशरत

४—मुबाशरत जिमा को कहते हैं, जिमा न करना पैदा करता है बीमारी शदीद। हज़रत एक रात में तमाम बीवियों से ···—करते थे। हजरत को ४० बहिश्ती मरदों की ताक़त दी गई थी। बहिश्ती १ मर्द में १०० जमीन के इन्सानों की ताक़त होती है।

जि० १ सफा ४६, ५०

५—हजरत की अक्ल ९९९ हिस्से थी। अगर अक्ल के १ हजार हिस्से किये जायँ, तो ९९९ हिस्से हजरत में थी और १ हिस्से में कुल जहान है।

जि० १ सफा ७२

हज़रत गुनहगार थे

३—ले यगफिर लकल्लाहो मा तक़द्दमामिम् ज़म्बेक व मा तअख्खर। अक़्बाल-क़ौल इस जगह बहुत हैं। बाज़ों ने कहा है, मुराद वह चीज़ है जो वाके हुई हज़रत से जहालियत में नबी होने से पहले। मजाहिब ने कहा कि 'मात-क़द्दमा" के।

अर्थ हैं 'ऐ मुहम्मद ! अल्लाह ने तेरे अगले-पिछले गुनाह माफ़ कर दिये।" से मुराद मारिया का क़िस्सा है * "मा तअख्खरा" से मुराद जैद मुतवन्ना की बीबी जैनब के निकाह से है। खुदा ने अपने हबीब—दोस्त को फ़रमाया कि तेरे उन गुनाहों को जो गुजरे और उन गुनाहों को जो आयन्दा हों सब को बख्शता हूं। बख्शा हमने तुझे और दर गुज़र किया हमने उन गुनाहों से जो तुमसे हुये और आयन्दा हों।

मिनहाज जि० १ सफा १५१, १५२, १५४

जब हर एक उम्मत अपने-अपने पैगम्बरों से शिफ़ाअत की ख्वाहिश करेगी, तब वे—पैगम्बर याद करेंगे अपने-अपने गुनाहों को।

जि० १ सफ़ा १५५

"व जदक' जाल्लन् फ़हदा" यानी और पाया तुझे खुदा ने 'जाल'—गुमराह पस रहनुमाई की ज़ाल के माने गुमराह नस्व के साविका ज़लालत की तरफ़ उस सरवर के।

जि० १ सफ़ा १७७

"वजह क जाल्लन् फ़हदा" यानी पाया खुदा ने उस सरवर को राह गुम की थी, पस रहनुमाई की।

जि० १ सं० १८०

नोट—*मारिया हफ़सा की लौंडी थी। हफ़सा की बारी में हज़रत ने उसी के बिस्तर पर उसकी गैरहाजिरी में उस लौंडी से मोहबत की। इतने में हफ़सा आ गई। हज़रत ने उससे माफी मांग ली और मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया। लेकिन हजरत से न रहा गया और आयत उतार कर फिर हलाल कर दिया। लेखक—

फ़रमाया रसूले खुदा ने क़स्द नहीं किया मैंने किसी हाल में किसी चीज़ की तारीफ़ उन चीज़ों से जो अहले जाहिलियत जहालत के समय के लोग, अमल करते थे मगर दो बार ·· ··· और बाद उसके हरगिज़ नहीं क़स्द किया मैंने बदी का।

जि० १ स० १८२

बाज़ों ने कहा—मुराद बकुअ़ गुनाह है सह्व और ग़फ़लत से (भूल और प्रमाद से) और यह वह तावील है जिसे तिवरी ने हिकायत किया है, और क़ैसरी ने इख़्तयार किया है। समरकन्दी ने कहा कि "जम्ब" मुराद तर्कऊला है—(परम धर्म छोड़ना हैं।)

जि० १ स० १८५

मुरदा परिंदो को जिन्दा करना

७—हजरत इब्राहीम न खुदा से सवाल किया कि कयामत के दिन मुरदे किस तरह जिन्दा होंगे ? खुदा ने कहा। कई एक गड्डबड्ड करके पहाड़ पर रख दे और हर एक को पुकारो, इब्राहीम ने ऐसा ही किया। हर एक परिन्द को कुचल डाला गया था अपने अपने रूप रंग से उड़ कर इब्राहीम के पास आ गए।

जि० स० १८८, १८९

खुदा ने आदम को अपने हाथ से बनाया और अपनी रूह फूंकी।

८—आदम को यह फज़ीलत—(बड़प्पन) दी गई कि पैदा किया अल्लाह ने उसको अपने हाथ से और रूह फूंकी अपनी उसमें।

जि० १ सफा २२९

पत्थर ने रसूल होने की गवाही दी

पस इशारा किया हजरत ने उखेड़ा गया वह पत्थर अपनी जगह से और सलाम किया उसने, और उन जनाब के आगे खड़ा हुआ और शहादत दी उस पत्थर ने जनाब की रिसालत पर।

जि० १ सफा २३१

सङ्ग असवद ख़ुदा का दाहिना हाथ है

१०—"अल् हज़रुल् असवदो यमीनल्लाह"। यमीन के माने सीधा हाथ और कुव्वत और तवानाई हैं। अर्थ संग असवद ख़ुदा का दाहिना हाथ है जिसका बोसा दिया जाता है। क़यामत के दिन इस पत्थर के आंख और जुबान होगी। अपनी ज्यारत करने वालों को पहुंचावेगा और उनके लिये बख्शवाने की ख्वाहिश करेगा।

जि० १ स० २३३

पत्थर ने हज़रत से बातें कीं।

जि० १ स० २३७

हज़रत को अजनबी औरत मुब्बाह है

११—जैसा कि मुहव्वाह होना नजर का ऊपर अजनबी औरतों के और जायज होना बेवा खिलवत का अजनबी औरत से······शौहर वाली औरतें अपने मर्द पर हराम होती थी अगर उन औरतों को रसूल चाहे।

जि० १ स० २४३

सफिया जंग खैबर में क़ैद हुई, जब वह हज़रत के सामने आई, तो ह० आयशा ने विचारा कि कहीं ऐसा न हो कि हज़रत की निगाह इस पर पड़ जाय। सफिया निहायत खूबसूरत थी। ज्यों ही हजरत ने देखा फौरन् निकाह कर लिया।

जि० १ स० २४४

१२—सबको उस सरबर हज़रत मुहम्मद को नूर से पैदा किया।

जि० १ स० २४६

१३—हजरत को ख़ुदा ने बहिश्ती शराब पिलाई थी।

जि० १ स० २४८

१४—सुहाव—टूटने वाले तारे से आसमान से शैतान भागे जाते हैं ।

जि० १ स० २५१

१५—असराफ़ील हज़रत के पास दो मरतवा आया । जव हज़रत ७ बरस के हुये असराफ़ील फ़रिश्ता मुलाज़िम हो गया ।

जि० १ सं० २६२

समीक्षा—जब असराफ़ील सूलो लिये फूंकने को हर समय तैयार रहता है, तो अपना काम छोड़कर कैसे आया ? यह खुदाई अन्धेर है ।

१६—हज़रत का नमाज में भूल जाना सवको तसलींम है ।

जि० १ स० २६४

१७ · जौनिया अरव की खूवसूरत औरत का क़िस्सा बयान किया गया है । हज़रत ने उसको बुलाकर उसने नफ्स बख्शवाना चाहा ।

जि० १ स० २६७

१८—हजंरत ने एक औरत की बगल में सफ़ैदी देखकर उसे त्याग दिया ।

जिल्द १ सफ़ा २६६

१९—हज़रत हसन हुसैन का सिर सूघते थे ।

जिल्द १ सफ़ा २६९

२०—जिसने देखा मुझे उसने देखा खुदा को ।

जिल्द १ सफ़ा २७१

२१—मोमिनों की रूहें जन्नत हरे परिन्द वनकर वहिश्ती मेवे खाते हैं ।

जिल्द १ सफ़ा २९१

२० -- अल्लाह ने अम्बिया की खता और तोबा का जिक्र किया है ।

जिल्द १ सफ़ा २९७

समीक्षा -- मुसलमानों का विश्वास है, नवी खता से वरी होते हैं, सो गलत है । नवी गुनहगार भी होते हैं । इससे यही सिद्ध होता है ।

बाप वेटे के आमाल -- कर्मों का जिम्मेदार नहीं होता, यह कुरान की आयत मन्सूख हो गई । (जैसी करनी वैसी भरनी इस्लाम में नहीं रहा) ।

जिल्द १ सफा ३१७

२४—अल्लाह ने क़लम से सब की तक़दीरें लिखीं ।

जिल्द १ सफा ३३९

खुदा भी नमाज़ पढ़ता है

२५—पश एक निदा—शब्द करने वाले ने अबूबक्र की आवाज में कहा कि "खड़ा रह मुहम्मद । पास परवरदिगार तेरा नमाज करता है ।"

जिल्द १ सफा ३४२

२६—खुदा ने अपना हाथ हजरत के सीने पर धरा, हजरत को खुदा के हाथ कीं ठडक मालूम हुई । (मालूम होता है कि कुरानी खुदा शरीर धारी है ।

जिल्द १ सफा ३४३

२७—चाँद का एक टुकड़ा पहाड़ पर और दूसरा पहाड़ के नीचे गिरा । चांद हजरत की आस्तीन से निकला । यह शक्कुल कमर—चाँद के दो टुकड़े करने का मौजजा है ।

जिल्द १ सफा ३५७

हज़रत पर शैतान का ग़ल्बा

२८—एक दफ़ा सफ़र में हज़रत सो गये, सूरज निकल आया । जब हज़रत के पेट पर धूप आ गई, तब हज़रत जगे और कहा—"चलो यह जगह शैतान की है । नमाज़ फ़ौत हो गई ।" (हज़रत कहते थे कि मुझ पर शैतान का असर नही होता लेकिन इस जगह शैतान ने नमाज़ के वक्त भुला दिया और नमाज क़ज़ा करा दी)।

जिल्द १ सफ़ा ३६०

२६—हज़रत की जुदाई में मसजिद का सुतून—थम्ब रोया ।

जिल्द १ सफ़ा ३७१

३०—अल्लाह आपस में लड़ाई करायेगा ।

जिल्द १ सफ़ा ३७८

३१—दो गिरोह अली के दुश्मन हैं—ख़ारिजी और राफ़ज़ी ।

जिल्द १ सफ़ा ३७८

३२—गुनाह सबब मर्ज का है । (हज़रत भी मरीज़ हुये थे । क्या वह भी गुनहगार थे ?)

जि० १ स० ३८३

३३—तावीज़ बांधना शिर्क है ।

जि० १ स० ३८५

३४—गुनाहों के सबब से रिज़्क की तगी होती है । हज़रत को भी अकसर खाना नसीब नहीं होता था, इसीलिये पेट से पत्थर बांधे रहते थे)।

जि० १ स० ३९२

३५—हज़रत ने कहा, अगर बच्चा पैदा हो, तो उसके सीधे कान में अज़ान कहे

ज़ि० १ स० ३९२

३६—जब हज़रत हुदीविया की लड़ाई से लौटे, तो उन पर ज़ादू किया गया। जि० १ स० ३९६

३७—हज़रत ने फरमाया कि औरत मर्द की रूह सोते वक्त बदन से निकल कर अर्श की तरफ़ जाती है। (अरबी रसूल रूह की हक़ीक़त भी .खूब जानते थे !)। जि० १ स० ३९८

३८—हज़रत ने ख्वाब में दूध पिया। हज़रत को ख्वाब में खजाने मिले। जि० १ स० ४०१

समीक्षा—मुसलमान कहते हैं कि हजरत को ख्वाब (स्वप्न) नहीं होता था। इस रिवायत से पता चलता है कि उनको रुपये दीखते थे।

३९—हज़रत की कुन्नियत अब्बुल मोमिनीन है। जि० १ सफा ४११

समीक्षा—कुन्नियत कहते हैं अपने आपको बाप या बेटों के नाम से ज़ाहिर करना। अब्बुल मोमिनीन के माने हैं मुसलमानों का बाप। जब मुसलमानों के बाप हैं, तो अपनी······हज़रत के लिये हलाल कैसे हुई ?

४०—.खुदा और रसूल दोनों के हजार नाम हैं। जिल्द १ सफ़ा ४११

४१—रहीन, करीम, नूर और अजीम .खुदा और रसूल दोनों के नाम हैं। जि० १ स० ४१४

४२—हजरत ने फ़रमाया कि मुझे पहले आदम के सलब में—नुतफे में रक्खा, फिर नूह के, फिर इब्राहीम के। जि० १ स० ४१८

(हज़रत का नूर आवागमन के चक्कर में पड़ा था)

४३—आदम ने कहा कि मुझको गेहूँ खाने से बहुत नदामत है। नूह कहेंगे कि मैंने अपने बेटे के लिये नादानी से दुआ की। इब्राहीम कहेंगे कि ३ बातें मैंने झूठ कहीं—

१—मैंने कहा मैं बीमार हूँ—"इन्नी सकीम", २—मैंने बुतों को नहीं तोड़ा, ३—मैंने जोरू को बहन कहा।

(यह तीनों बातें हज़रत इब्राहीम ने ग़लत कही थीं, इसलिये अपने को गुनाहगार कहते थे)।

४४—जिसके दिल में गेहूँ और राई के बराबर भी ईमान होगा, वह भी बख्शा जायगा। जो "ला इलाहाइल्लिल्लाह" कहेगा, वह दोज़ख से निकाल लिया जायगा।

जि० १ स० ४२५

४५—जो मेरी कब्र की ज़ियारत करेगा, उसकी शिफाअत होगी।

जि० १ स० ४२६

४६—जिब्राईल आमाल तौलेगा, उसके हाथ में तराजू होगी।

जि० १ स० ४२९

४७—मेरे साथ जन्नत में वह औरत जाना चाहेगी जिसने पूछने पर कहा, मैंने अपने पति के मरने पर दूसरी शादी नहीं की।

जि० १ स० ४३०

समीक्षा—इस्लाम की रू से भी मालूम होता है कि विधवा-विवाह या नियोग आपद्धर्म है। विधवा होने पर शादी न करना परक धर्म है।

४८—ईसा रूह अल्लाह है।

जि० १ स० ४३१

(क्वारों से पैदा हुए क्या सब ही रूह अल्लाह है ?)

४६—सिवा खुदा के दूसरे की क़सम खाना कुफ़ है।

जि० १ स० ४३१

५०—दोपहर का सोना सराय और मदरसे बनाने से बेहतर है।

जि० १ स० ४३६

समीक्षा—हज़रत दोपहर को सोते थे। उन्होंने सराय और मदरसे नहीं बनवाये, इसलिये सुन्नत होने से दोपहर का सोना बहतर है। इनकी इसी जिहालत ने अरबों को बेइल्म रक्खा।

५१—सर्फ नहव का इल्म-व्याकरण विद्या हज़रत के जमाने में नहीं थी।

जि० १ स० ४३६

समीक्षा—जो काम हज़रत ने नही किया, उसका करना 'बिदग्रत' कहाता है ; परन्तु जो काम नहीं किया, लेकिन है वह अच्छा काम, तो उसका करना 'बिदग्रते हसना' कहाता है।

५२—हज़रत उमर ने कहा मैं जानता हूँ कि ऐ संग असवद तू पत्थर है, लेकिन तुझको हज़रत ने चूमा है इसलिये मैं भी चूमता हूँ।

जि० १ स० ४३६

(इससे नफ़-नुक़सान कुछ नही है, तो फिर मुसलमान इसको क्यों चूमते हैं ? इसी को अन्धी तक़लीद कहते हैं)।

५३—अबदुल्ला बिन हज़र वज़ु करके एक दरख्त के गिर्द घूमता (परिक्रमा करता) था और उसकी जड़ में पानी डालता था। पूछने पर कहा कि हजरत ऐसा ही करते थे, इसलिये मैं भी करता हूँ।

जि० १ स० ४३७

(वाहरी अन्धी तक़लीद !)

५४—.खुदा और रसूल को दोस्त रक्खें, तो नमाज रोजे की हाजत नहीं हैं।

जि० १ स० ४४०

५५—एक शख्स ने दो बार शराब पी, हजरत ने कहा इसको लानत मत कहो, यह मुझे और .खुदा को दोस्त रखता है।

जि० १ स० ४४३

(कुछ सब्ज के तरकारी हज़रत को लाकर देता था)

५६—हजरत के वजू के पानी से लोग अपना मुँह और बदन .रू करते थे।

जि० १ स० ४४८

५७ -रसूल के अदब से ज्यादा कोई इबादत नहीं।

जि० १ स० ४४९

५८—हजरत अपनी .जुबान लोगों के मुँह में देते थे।

जि० १ स० ४५४

५९—मुसलमान ३ तरह के हैं - महाजिर, अन्सार और उनके बाद को जो पैदा हुए। लेकिन शिया इन तीनों में नहीं हैं।

जिल्द १ सफा ४५९, ४६०

६०—हजरत फरमाते थे कि ऐ खुदा, तू मेरे गुनाह बख्श दे।

जि० १ स० ४७१, ४७२

६१—आँ हजरत रसूल होने से पहले किस शरीअत के मुआफ़िक़ इबादत करते थे, इसमें इख्तलाफ है।

जि० १ स० ४८९, ४९०

६२—अबदुल्ला बिन .जैद ने फ़रिश्ते से अजान सीखी, फरिश्ते के हाथ में संख था।

जि० १ स० ५१४

६३—हज़रत ने ५ दफ़ा से ज्यादा नमाज में भूल की ।
जि० १ सफ़ा ५५०

६४ - हज़रत ने लात ओर उज़्जा बुतों की तारीफ़ की ।
जि० १ सफ़ा ५५४

६५—अल्लाह ने यहूद और नसारा (ईसाइयों) को गुमराह किया ।
जि० १ सफ़ा ५५२

६६—आयशा गुमान करती थी कि हज़रत मेरी बारी में और बीबियों के पास जाते हैं ।
जि० १ सफा ५७६

६७—खुदा नीचे के आसमान पर उतरता है ।
जि० १ सफा ५८१

६८—हज़रत के पीने के लिये जिब्राईल बहिश्ती शराब लाता था ।
जि० १ सफ़ा ६३३

६९—हज़रत को ३ चीजें प्यारी थीं - खुशबू, औरत और खाना ।
जि० १ सफ़ा ६७६

७०—हज़रत की औरतों से तबीयत नहीं भरती थी । एक-एक रात में हज़रत १२ औरतों से मुबाशरत (भोग) कर लेते थे ।
जि० १ सफ़ा ७२६

७१—ज्यादा जानने वाली औरतों से निकाह करो ।
जि० १ सफा ७३०

समीक्षा—क्या शादी करने से पहले किसी के पास भेज कर इमतहान करा ले कि यह औरत ज्यादा बच्चे जनेगी ? वरना और दूसरी तरक़ीब क्या है जिससे जाने कि यह औरत ज्यादा बच्चे जनेगी ? जिनके मज़हब के ऐसे मसले हों, वह भी निर्दोष पर आग डालते हैं !"

मिनहाजुन्नबव्वत तरजुमा मदारिजुन्नबव्वत

जिल्द २

१—हज़रत मुहम्मद साहिब फ़रमाते है—ख़ुदा ने अव्वल मेरा नुर (ज्योति) पैदा किया, उससे दुनिया पैदा हुई ।

सफा १, २

२—अगर तू (मुहम्मद) न होता, तो मैं दुनिया को पैदा न करता ।

सफा ५

३—बाई पसली की हड्डी से ह० हव्वा कों पैदा किया ।

सफा ६

४—आदम के आंसुओं से---ऊद, ज़ञ्जावील, और वहुत-सी खुशबूएं पैदा की ।

सफा ७

५—हव्वा से हर दफा जोड़ा पैदा होता था । 'शैस' मुहम्मद के वुजुर्ग अकेले पैदा हुए । हव्वा नें शैस को वसीअत की, शैस ने 'अनीश' को वसीअत की कि इस नुर को औरतों में रखना (इस तरह वहुत-से मर्द औरतों में होता हुआ नूर हजरत अब्दुल्ला--हज़रत के वाप तक पहुँचा) ।

जि० २ सफा ७

६---सफ़हा लोग (नीचे दरजे के लोग) अपनी औरतों को शुरफा (शरीफ लोगों) के पास भेजते थे, ताकि वे हामिल (गर्भवती) हो जावें । कभी-कभी औरतें मुद्दत तक जिना कराती, फिर उनसे शादी कर लेती । अरव में पुराने जमाने में औलाद हासिल करने के कई तरीके थे, छोटे लोग अपनी औरतों को शरीफ लोगों के पास भेज देते थे, जिससे कि बच्चा अच्छी नसल का हो । कभी-कभी एक टोली भर नें औरत संयोग करती थी ।

बच्चा पैदा होने पर जिसकी शक्ल का होता था, वही उसका बाप गरदाना जाता था। बहुत-सी औरतें अनेक मरदों से व्यभिचार कराती रहती थीं, जब कभी दिल में आता शादी कर लेतीं, वरना इस ही तरह उम्र गुजार देती थीं। हज़रत फ़रमाते है कि मैं इस तरह पैदा नही हुआ।

७—हज़रत भी औरों के साथ कावे की मरम्मत के लिये पत्थर ढो रहे थे। आपनें अपनी इज़ार (सूतन) उतारकर अपने कन्धे पर पत्थर के नीचे रख ली। थककर गिर पड़े, सारा अंग आगे-पीछे से लोगों को दिखा दिया।

जि० २ सफा ५६

८—कावे को पहले शेस ने बनाया।

सफा ५८

९— सबसे पहिले जिब्रील फरिश्ता कुरान की आयत रेशमीन कपड़े पर लिखी हुई हज़रत के पास लाया और कहा "पढ़"।

सफा ६२

१०—जिब्राईल नें हज़रत को वजु और नमाज़ सिखाई।

सफा ६३

११—कोई कहता है कि सबसे पहले "इकरा बिस्मे रब्बेक" आयत नाज़िल हुई, कोई कहता है कि "याअय्योहल मुद्दस्सरो" यह आयत नाज़िल हुई, कोई सूरए फ़ातेहा का उतरना सबसे पहले बताता है। (अजीब गड़बड़ है)।

जि० २ सफा ६८

१२—जिब्राईल यहैबा की शक्ल में जिब्राईल फ़रिश्ता हज़रत के पास आता था। (यहैया) को भी जिब्राईल नाम से पुकारते थे। यह मक्के में उस वक्त सबसे खूबसूरत आदमी था। इसलिये इस हीं की शक्ल में फ़रिश्ता भी आता था। (मुमकिन है कि

यही जिब्राईल शख्स मक्के का खूबसूरत आदमी हजरत को इनकी मरजी के मुआफिक आयतें बनाकर देता हो और हजरत ने यह जाहिर कर दिया हो कि यह मक्के का जिब्राईल नहीं है लेकिन फरिश्ता है और मक्केवाले जिब्राईल की सूरत इख्तयार किये हुये हैं)।

जि० २ सफा ७०

१३—बदर की लड़ाई में मरे हुये बहिश्त के गये हैं ।

सफा ७०

१४—जिब्राईल के छः सौ पर थे । सफा ७२

समीक्षा—तअज्जुब है कि मिरजाई लोग जिब्राईल के वजूद और परों से इन्कार करते हैं । हमने यह हवाला इस हो लिये दिया है ।

१५—हजरत फरमाते हैं कि—मैराज के मौके पर मैंने खुदा को बेहतरी (अच्छी सूरत) में देखा । खुदा ने मेरे दोनों शानों (मोढ़ो) के बीच में हाथ रख दिया । खुदा की उँगलियों की ठंडक मुझको मालूम पड़ी ।

जि० २ सफा ७३

१६—एक आयत को भी कुरान कहते हैं ।

जि० २ सफा ७७

१७—कुरैशियों का अकीदा (विश्वास) था कि बुत शिफा दिलानेवाले हैं खुदा से कहकर बख्शवाने वाले हैं, न कि खालिक हैं (सृष्टिकर्ता हैं) न मारने-जिलाने वाले हैं, न रोजी दिलाने वाले हैं । (इसी प्रकार का मुसलमानों का संग असवद है) ।

जि० २ सफा ८५

१८—सूरए नज्म में शैतान ने आयतें मिला दी ।

जि० २ स० ८५

१९—आयशा शादी के वक़्त छः साल की थीं।

जि० २ स० १०२

२०—मछली की पीठ पर जमीन कायम है।

जि० २ स० १४१

२१—आयशा ज़फ़ाफ़ (भोग) करने के समय ९ साल की थीं।

स० १५८

२२—यहूदियों की ख़ातिर हज़रत मदीने में बैतूल मुक़द्दस (यहूदियों) के काबे की तरफ़ को नमाज़ पढ़ते थे।

जि० २ स० १९६

२३—मोमिनों (मुसलमानों) की रूहें बहिश्त में परन्द बनती हैं।

जि० २ स० २१३

२४—मुसलमानों उज़्ल किया करते थे, क्योंकि यह जायज़ है।

२५—अबदुल्ला बिन हमार शराब पीता था, लोग इसको बुरा कहते थे। हज़रत ने कहा, इसको मलामत मत करो।

समीक्षा—यह हजरत का दोस्त था, अक्सर सब्ज तरकारियाँ वग़ैरह बाहर से लाकर दे दिया करता था। इसी से हज़रत मना करते थे कि इससे कुछ मत कहो। ऐसा न कहो कि ये चीजें लाना बन्द कर दे।

२६—आख़िरी तक खैबर की लड़ाई का दिया हुआ ज़हर रगेजान को तोड़ता रहा। हजरत की एक औरत ने जहर दे दिया था।

स० ५०८

२७—मरते समय आयशा ने हजरत के मुंह में अपनी जूठी दतौन दी।

जि० २ स० २९३

८—आयशा की हथेली बहिश्त में देखकर हज़रत की मौत आसान हो गई (हज़रत का दम नहीं निकलता था)। खुदा ने आयशा की हथेली आसमान पर दिखाई; हज़रत को तसल्ली हो गई कि १८ बरस की आयशा यहाँ छुटती है, तो आसमान में मिल जायगी, अब मरने में कोई घाटा नहीं है।

जि० २ स० ७६४

२९—ह० सौदा के बूढ़ी होने पर हज़रत ने तलाक देनी चाही। उन्होंने कहा, अपनी बारी आयशा को देती हूँ। जनाब ने उनको फिर तलाक़ नहीं दी।

जि० २ स० ८५१

३०—हज़रत ने जब जैनब से भोग करना चाहा, तो हज़रत जैनब ने कहा कि विना निकाह यह क्या करते हो? जनाब ने फरमाया कि खुदा ने मेरा और तेरा निकाह आसमान पर पढ़ा दिया है। जिब्राईल फ़रिश्ता गवाह है।

जि० २ स० ८६६

३१—जौनिया एक अरब की खूबसूरत औरत थी, हज़रत ने उसे बुलवाकर कहा कि तू अपना नक्श मुझे बख्श दे यानी बिना महर मुझसे खिलवत करा ले। उसने सख्त जवाब दिया। हज़रत ने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया, वह चिल्ला उठी।

जि० २ स० ८७८

३२—अर्श मखलूक (पैदाशुद) है।

जि० २ स० १०९१

३३—हज़रत की सूरत का तसव्वुर (ध्यान) करना और ज़हन में हाज़िर करना चाहिए।

जि० २ स० १०९०

३४—हज़रत तेरा कलाम सुनते और देखते हैं, क्योंकि आप सिफ़ाते-इलाही (ईश्वर के गुणों) से मुत्तासिक़ हैं (युक्त हैं) ।
जि० २ स० १०८६

३५—"लौलाक लमा खलकतुल अकलाक" ऐ मुहम्मद ! यदि तुम न होते, तो हम आसमानों को पैदा न करते ।
जि० २ स० १०८३

३६—अम्बिया (नबी लोग) अस्माए-ज़ातिया से (निज नामों) से पैदा किए गए हैं । औलिया (वली लोग) अस्माए सिफ़ातिया (गौण नामों) से पैदा किये गये हैं और बाक़ी मौजूदात अस्माए फ़ेलिया से (कार्मिक नामों से) पैदा किये गये हैं । और रसूल मुहम्मद साहब ख़ुदा की ज़ात से पैदा किये गये हैं ।
जि० २ स० १०७६

३७—एक औरत का पति दो बरस तक बाहर रहा, पीछे बच्चा पैदा हो गया । खलीफा ने वह बच्चा उसी का बताया ।
जि० २ स० १०११

३८—जन्नत में मुसलमानों को १०० सौ औरतें मिलेंगी । ७० जन्नती और ३० दुनिया की ।
जि० २ स० १०००

३९—अबदुल्ला बिन साद बिन अबी सरह हज़रत का कातिब (कुरान लिखा करता) था । एक रोज जब कि हज़रत उसको कुरान लिखवा रहे थे, उस अबदुल्ला की जुबान से निकला—"फ़तबारकल्लाहो अल्लाहो अल् अहसनुल् खालकीन" । हज़रत ने फ़रमाया, लिख यही नाज़िल हुआ है । अबदुल्ला ने ख्याल किया कि यह फ़िक़रा तो मैंने अपनी तबीयत से बनाकर कहा था । हज़रत फ़रमाते हैं कि यह जिब्राईल लाया है । उसने यह भी ख्याल किया कि जिस तरह हज़रत पर वही आती है, वैसे ही मेरे ऊपर

भी आती है, तो मैं भी पैगम्बर क्यों नहीं ? यह बात उसने औरों से भी कहना शुरू कर दी, हजरत उसके दुश्मन बन गये। वह भागकर मदीने को चला गया। हजरत ने उसको मरवा दिया। वह मुरतिद हो गया था, यानी इस्लाम को छोड़ दिया था। (यह क़िस्सा इसी किताब में दर्ज है।)

जि० २ स० ६९६

४०—जिसकी मौत की वजह से रहमान का अर्श हिल गया।

जि० २ स० २४०

४१—मारिया क़बतिया रसूल की लौंडी थी। एक रोज उसके पास उसका अजीज बैठा था। रसूल ने देखकर कहा कि इसको क़त्ल कर दो। उमर तलवार लेकर पहुंचे। उसने कहा कि मैं खस्सी (नपुंसक) हूं। रसूल ने कहा, जिब्राईल की मारफ़त खुदा ने पहले ही बता दिया है, इसलिए इसको छोड़ दो।

जि० २ स० ६४०

४२—हजरत जैद को बाहर लाये और फरमाया कि 'ऐ लोगो ! गवाह रहो, जैद को मैंने अपना बेटा बनाया, और वह मेरा बेटा है। और मेरा वारिस वह हुआ। इसलाम के दौर आने तक जैद मुहम्मद का बेटा कहाता रहा।

जि० २ स० ६१०

४३—अबूबकर का पहला नाम अबदुलकाबा था, कुछ कहते हैं कि अबदरब्दुलकाबा था। रसूल ने आपका नाम अब्दुल्ला रक्खा, बाजे कहते हैं कि अतीक नाम रक्खा। अली का पहला नाम हैदर था। अबूतालिब ने इस नाम को मकरूह (घृणित) जानकर दुबारा अली नाम रक्खा।

जि० २ स० ६५२

४४—.जैनब का निकाह .खुदा ने आसमान पर पढ़ाया।

जि० २ स० ८७६

४५—हज़रत बाहर रात के वक्त जाते तो आयशा को शक होता था कि हज़रत मेरी बारी में किसी दूसरी औरत के पास जाते हैं। जि० २ स० ८५८

४६—हज़रत को आयशा की तसवीर रेशमी कपड़े पर जिब्राईल ने ख्वाब में दिखाई। शादी से पेश्तर।

जि० २ स० ८५४

४७—हज़रत नबी होने से पहले किसी शरह के पाबन्द नहीं थे। जि० २ स० ८४६

४८—जिब्राईल बहिश्ती शराब हज़रत को पिलाते थे।

जि० २ स० ६३३

समीक्षा—हज़रत बाहिश्ती शराब रोजे के दिनों में पीते थे।

४९—मौका बिन्त क़ाब की लड़की से जब हज़रत खिलवत करने लगे, तो देखा कि उसके जिस्म पर सफ़ेद दाग़ है। उसको उसके बाप के घर वापिस कर दिया।

जि० २ स० ८८०.

हज़रत की धाया हालिमा का बयान

५०—और अगर उस साहबे हया का अन्दाज खुल जाता, हरकत फरमाता, और पुकारता। मैं उससे दरयाफ़्त करती। यह हरकत और फ़रयाद सतर औरत के वास्ते है।

जि० २ स० ४०, ४१

५१—लैली नाम की औरत से हज़रत ने निकाह फिस्क कर दिया। उसने दूसरा शौहर किया और कई फरजंद हासिल किये।

जि० २ स० ८८०

ओ३म्

चमन इस्लाम की सैर

तीसरा दस्ता

तारीख़ ख़ुलफ़ा

१—लालकाई ने सनन में हज़रज इब्न उमर से रिवायत की है कि एक शख्स ने हज़रत अबूबकर से आकर सवाल किया कि—"क्या आप बतला सकते हैं कि जिना भी ख़ुदा के हुक्म से है?" आपने फ़रमाया—"हाँ"। उसने कहा, अव्वल तो (ख़ुदा ने) मेरे लिये (जिना) होना मुकर्रर किया, फिर मुझे आजाब (कष्ट) भी देगा? अबूबकर ने कहा—"सच है।"

तारीख ख़ुलफ़ा सफ़ा ९८ सतर १२ उर्दू तर्जुमा लाहौरी

२—जो इन्सान इन खब्बीस तरकारियों को (प्याज व लहसन को) खाये, वह मसजिद में न आवे।

ता० खु० स० ९३ सतर ५ तिबरानी से नक़ल है

३—अबूबकर ने कहा—'मैं चिड़िया होता, तो अच्छा था।"

ता० खु० स० १०४

४—कुरान हजरत उमर के कौल के मुआफ़िक़ नाजिल हुआ है।

ता० खु० स० ११८ सतर १३

५—ख़ुदा सबसे पहले उमर को सलाम करेगा और उससे मुसाफ़ा करेगा। हाथ पकड़कर जन्नत में दाखिल करेगा।

ता० खु० स० ११८ सतर २०, २१

६—कुरान उमर की राय से नाज़िल हुआ है।

ता० खु० स० १२३ सतर १६, १७, १८

कुरान में उमर की राय दर्ज है।

७—उमर कहते हैं कि मेरी ज़ुबान से ज्यूं ही यह कलाम निकला कि "फ़तेबारकअल्लाहो अहसनुल् खालक़ोन" यही आयत नाज़िल हो गई।

ता० खु० स० १२५ सतर १८, १९

८—उमर ने मुताअ को हराम किया।

ता० खु० स० १४२ सतर १

९—उमर ने अपनी लड़की से दरयाफ्त किया कि औरत बिना मर्द कितने दिनों रह सकती है? वह शर्म से चुप रही।

ता० खु० स० १४८ सतर ५, ६, ७

फिर फरमाया---३ महीने।

१०—इब्न मसऊद कहते हैं कि खुदा ने औरत को मर्द की बाई पसली से बनाया।

ता० खु० स० १४८ सतर १७

११—अबूबकर कहते हैं कि मैं दरख्त होता; उमर कहते हैं कि दुम्बा होता, तो अच्छा था।

ता० खु० स० १४९

१२—३०० आयतें कुरान में अली की शान में हैं।

ता० खु० स० १८१ सतर १० (इलहाम में भी इन्सान का दखल)

१३—उस्मान ने कुरान को उसी तरतीब (क्रम) से जमा किया, जिस तरतीब से नाज़िल हुआ था। मुहम्मद बिन सीरैन कहते हैं कि अगर वह कुरान शरीफ हमारे पास होता, तो इल्म का बहुत बड़ा ज़खीरा हमारे पास होता।

ता० खु० स० ९१७ सतर ६ से ९ तक

१४—हज़रत इमाम हसन ने ६० शादियां की थीं।

ता० ख़ु० स० २०३ सतर ६

१५—इमाम हसन की बीबी जाद बिन्त अश को मदीने में यज़ीद ने यह ख़ुफ़िया पैग़ाम भेजा कि अगर तू इमाम हसन को ज़हर दे दे, तो मैं तुझसे निकाह कर लूंगा। उसने ऐसा ही किया। इमाम हसन ने उस ज़हर से वफ़ात पाई।

ता० ख़ु० स० २०५ सतर १, २

१६—हिन्दा ने अपने ख़ाविन्द रफ़क़ा इब्न मुग़ीरह का हाथ झटककर कहा कि मैं तुमसे औलाद पैदा नहीं करती यह कहकर उसने अबू सफ़िया से शादी कर ली जिससे मुआविया पैदा हुआ।

(अरब की औरतें निहायत पतिव्रता थीं)

ता० ख० सफ़ा १२ सतर १५, १६, १७

१७—इमामहुसैन की शहादत (मृत्यु) के बाद उफ़क़ (शाम) के समय की आकाश छाई हुई लाली पैदा हुई। उससे पहले नहीं थी।

ता० ख़ु० सफ़ा २२३ सतर ८

१८—यज़ीद ने मदीने पर चढ़ाई की, उसे लूटा और कुमारियों के धर्म भ्रष्ट किये। ता० ख़ु० स० २२५ सतर ६ से

१९—ख़लीफ़ा हरूँ रशीद ने अपने बाप की लौंडी से सोहबत की। इमाम अबूयूसुफ़ ने इसके जायज़ होने का फ़तवा (व्यवस्था) दिया।

ता० ख़ु स० ३०५ सतर ५ से

२०—अबूबकर ने ज़ैद बिन साबित से कहा कि कुरान जमा करो। सही बुख़ारी के हवाले से व रिवायत ज़ैद है कि जंग मसीलमा क़ज़्ज़ाब के बाद जंग यमामा में बहुत से हाफ़िज़ मारे गये। ज़ैद बिन साबित कहते हैं कि मैंने काग़ज़ के परचों, ऊँट और बकरियों की शानों की हड्डियों, दरख़्त की पत्तियों और हाफ़िज़ों के सीनों से कुरान जमा किया। ता० ख़ु० सफ़ा ७६, ७७